



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 249]

No. 249]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 3, 1998/आषाढ़ 12, 1920
NEW DELHI, FRIDAY, JULY 3, 1998/ASADHA 12, 1920

MS
18.11.98

महानिदेशक (रक्षोपाय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 16 जून, 1998

विषय : भारत में एसीटिलीन ब्लैक के आयात से संबंधित रक्षोपाय जांच अंतिम निष्कर्ष

सा. का. नि. 377 (अ).—तत्रैव सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमा शुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान और निर्धारण) नियमावली 1997 को ध्यान में रखते हुए,

(क) प्रक्रिया

1. महानिदेशक (रक्षोपाय) इसमें इसके बाद ढीजी के रूप में लिखित है, ने एसीटिलीन ब्लैक (इसमें इसके बाद एबी के रूप में लिखित है) के आयात से संबंधित रक्षोपाय जांच की प्रारम्भिक निष्कर्षों को दिनांक 27 जनवरी, 1998 को अधिसूचना संख्या रक्षोपाय/जांच/1/97 के द्वारा अधिसूचित किया था और शासकीय राजपत्र में दिनांक 04 फरवरी, 1998 को प्रकाशित किया था।

2. प्रारम्भिक निष्कर्ष पर अपने दृष्टिकोणों से महानिदेशक को 9-3-98 तक अवगत कराने के लिए कथित अधिसूचना की एक प्रति सभी ज्ञात हच्छुक पक्षों को भेजी गई थी। नोटिस की एक प्रति नियातक सरकारों को उनके दूतावास के माध्यम से भेजी गई थी।

3. निम्नलिखित पक्षों द्वारा अपने जबाब प्रस्तुत करने के लिए समय बढ़ाने के लिए प्रार्थना की गई थी :—

1. मैं० पैन्यम सीमेंट्स एण्ड मिनरल इंडस्ट्रीज लिमिटेड।

2. मैं० सेकं कार्बन प्राइवेट लिमिटेड

3. मैं० टेसिल एंड हाइड्रो पावर लि०

4. इंडोमिक एंड कमर्शियल काउंसलर, एम्बेसी आफ पिपल्स रीपब्लिक ऑफ चाइना

उनकी प्रार्थना पर ढीजी ने विचार किया और 24-3-98 तक के समय बढ़ाने की अनुमति दे दी गई थी।

4. दिनांक 27-1-98 के नोटिस के उत्तर में निम्नलिखित पक्षों द्वारा जबाब प्रस्तुत किए गए :—

(क) अपने बकीलों के माध्यम से सभी घेरलू उत्पादकों द्वारा

(ख) अपने बकीलों के माध्यम से सभी आयातकों द्वारा

{ग} नियांत्रिकों/नियांत्रिक देशों की सरकारें द्वारा

1. उच्चायुक्त, रिपब्लिक आफ सिंगापुर
2. पम्बेसी आफ दी पीपल्स रिपब्लिक आफ चाइना
3. पम सी सी आई कारपोरेशन फिलिपिन्स
4. छ: देशों यथा बेस्टियम, पीपल्स रिपब्लिक आफ चाइना, जापान, फिलिपिन्स, सिंगापुर और साउथ अफ्रीका की ओर से संयोजन के रूप साउथ अफ्रीका का उच्चायोग
5. मै० डेंकी कागाकू कोग्यो काबुसकी कैसा [डेकां]
6. मै० डेकां सिंगापुर प्राइवेट लिमिटेड [डी.पस.पी.पल]
7. पम्बेसी आफ फँस
8. पम्बेसी आफ जापान

5. जांच के लिए आवश्यक समझी गई सूचना का सत्यापन अधिकारियों की एक टीम द्वारा कराया गया और इसके लिए जांच अधिकारियों की एक टीम द्वारा घेरलू उत्पादकों और कुछ आयतको/बैटरी विनिर्माताओं के यहाँ मार्च, १९९८ में की गई। इस सत्यापन के निष्कर्ष से संबंधित पक्षों को अवगत कर दिया गया था।

6. एक सार्वजनिक सुनवाई विनांक १२.५.१९९८ के लिए निश्चित की गई थी, जिसे स्थगित कर बाद में विनांक २६.५.१९९८ को सुनवाई की गई थी। निम्नलिखित पक्ष सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित थे :-

1. अपने वकीलों के माध्यम से सभी घेरलू उत्पादकगण
2. अपने वकीलों के माध्यम से सभी आयतगण
3. अपने वकील के माध्यम से मै० डेंकी कागाकू कोग्यो काबुसकी कैसा
4. अपने वकील के माध्यम से मै० डेकां सिंगापुर प्राइवेट लिं० [डी.पस.पी.पल]
5. अपने स्थानीय पर्मेंट के माध्यम से मै० काबोकेम, साउथ अफ्रीका
6. वक्षिण अफ्रीका उद्योग
7. पम्बेसी आफ जापान
8. रिपब्लिक आफ सिंगापुर

सार्वजनिक सुनवाई के दौरान जो साक्ष्य भौतिक रूप से प्रस्तुत किए गए थे उन्हें लिखित में प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था जिससे कि ये ३.६.१९९८ तक डी.जी के पास पहुँच जाएं। सभी पक्षों से दूसरे पक्षों के लिखित जवाबों की प्रतियाँ विनांक ४.६.१९९८ को डी.जी. के ऑफिस से प्राप्त करने तथा अपने किसी प्रतिवाद को १०.६.१९९८ तक प्रस्तुत करने के लिए कहा गया था। इस समय सारणी का पालन करने वाले पक्षों के जवाबों को रिकार्ड पर ले लिया गया है।

४. घेरलू उद्योगों के वृष्टिक्रोण :

7. घेरलू उत्पादकों ने निम्नलिखित मूल्य मुद्रे उठाए है :-

1. कि वे इर्दी सेल बैटरी मैन्यूफैक्चर्स पसीशिएशन के अस्तित्व से परिवित नहीं हैं और उन्हें पता नहीं है कि अध्यावेदन के लिए यह एक मान्यता प्राप्त संस्था भी है या नहीं।

एसीटिलिन ब्लैक के घेरलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत आवेदन में एडीसीबीएम का न तो कहीं उल्लेख है और न ही इसने इफ्युक पश्च की सूची में अपना नाम लिखाया है। इस परिस्थिति के बावजूद डी जी ने एडीसीबीएम द्वारा उठाए गए मुद्रों पर संज्ञान लिया है।

2. एडीसीबीएम द्वारा तैयार किए गए वर्ष 1996-97 और 1997-98 के लिए क्षति विश्लेषण एवं उद्योग में चल रही स्थिति के सही प्रतिविष्व नहीं है। वर्ष 1997-98 में उत्पादन के स्तर और बिक्री में गिरावट केवल पब्ली के अंधाधुंध आयात, निर्यातिक देशों द्वारा असंगत मूल्य में कमी और आयातों और घेरलू स्ट्रोतों के बीच मूल्य युद्ध पेश करने में देशी इर्दी सेल बैटरी विनिर्माताओं के आग्रह के कारण और लगातार आयातों की धमकी, संशोधित अनुसूची, और कुल खरीद की घटी हुई मात्रा यदि घेरलू उद्योगों ने अपनी कीमतें आपरेशन की अलाभकर स्तर तक कम न की धमकी के कारण है।

3. केरल में बिजली की स्थिति और 1996-97 में उद्योग की निराशाजनक स्थिति के बावजूद घेरलू उत्पादकों को माल की आपूर्ति रोकने का कोई प्रश्न नहीं था। घेरलू उद्योग वास्तव में 1997-98 में बहुत गहरा प्रभावित हुआ जब समुद्रपार से सप्लायरों द्वारा घेरलू बाजार के मुकाबले एवं कीमत कम करने से पब्ली का भारी आयात हुआ।

4. एवं के भारी आयात का प्रभाव, जो कि 1996-97 में शुरू हुआ और अन्धूरण जारी रहा, ने एवं के निर्माताओं के प्रदर्शन को 1997-98 दूसरे छाफ में प्रभावित किया। जब सर्वत्र लाभकारी स्तर के नीचे कम उत्पादन पर चलाए जा रहे थे। मैं ३१ दिसंबर इर्दी सेल बैटरी मैन्यूफैक्चर्स आई डी सी बी पम् द्वारा कम कीमत पर एवं को प्राप्त करने का प्रस्ताव और कम उत्पादन ने घेरलू उद्योग के वित्तीय परिणामों को प्रभावित किया है।

5. पैन्यम में अप्रैल-सितम्बर, 1997 की अवधि के दौरान 937 मी.टन की तुलना में अक्टूबर-दिसम्बर, 97 की तिमाही के दौरान केवल 296 मी.टन का उत्पादन हुआ। सितम्बर, 1997 तक माल भेजने के पुष्ट आदेशों/प्रेषण निर्देशों की कमी के कारण पैन्यम के पास बिक्री का भारी स्टक था

6. कर्नाटक और केरल में पावर समस्या के बावजूद, पैन्यम जिसकी स्थापित क्षमता 1800 टीपीए थी, और 80% दक्षता पर उत्पादन की आशा थी, ने वास्तव में 1996-97 में 1949 मी.टन का उत्पादन किया और कुल खरीद के कम स्तर के कारण केवल 1786 मी.टन की बिक्री की।

7. सितम्बर, 96 में एक मास के लिए पैन्यम संयन्त्र का वार्षिक रखरखाव के लिए कन्व होना किसी भी निर्माण संयंत्र के लिए एक सामान्य बात है।

8. वर्ष 1994-95, 1995-96, एवं 1996-97 के दौरान सेकां की स्थापित क्षमता क्रमशः 600 ट्रीपीए, 600 ट्रीपीए और 900 ट्रीपीए के विरुद्ध क्रमशः 404 मी.टन, 407 मी.टन और 607 मी.टन । जब कार्य सीमित है पर्याप्ति की हुई । वर्ष 1996-97 में सेकां अपनी उपयोगिता क्षमता के बहुत इसीलिए बढ़ सका क्योंकि मै 0 इंडोनेशनल लिमिटेड ने आयात के बजाए सेकां से एकी स्थानीय उत्पादन और यहां तक कि सेकां को कैरिश्यम कार्बाइड की सप्लाई की व्यवस्था की जिससे वे एकी का उत्पादन परिवर्तन आधार पर कर सके । मै 0 एवेरेंज इंडस्ट्रीज और मै 0 लखनपाल भी सेकां के पास और उपलब्ध क्षमता का उपयोग कर सकते थे विशेष रूप से जब कि 1997-98 में ट्रेसिल उनके नियन्त्रण से छाहर के कारण विपत्ति में थी । मै 0 आई.एन.एल ने भी सेकां से जाब वर्क का कार्य समाप्त कर दिया और आयात की ओर अग्रेशित हो गया ।

9. मै 0 जीप उनके स्वयं के द्वारा दी गई अनुसूची अनुसार आर्डर वाले माल को उठाने में भी असफल रहे । उन्होंने उस संबंध में 30 दिन की उथार के लिए आग्रह किया जिसे सेकां ने उनके देना स्वीकार कर लिया तत्पश्चात् उन्हें भुगतान प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास करने पड़े । उन परिस्थितियों में यह अनुमान लगाने पर विवश होना पड़ा कि आयातित एकी की सप्लाई/आक्रक के भ्रम में यह आर्डर उनके लिए बफर मात्र था ।

10. 1996 में कुछ समय के लिए ट्रेसिल को पावर कट्स और श्रीमिक समस्या का सामना करना पड़ा था । कार्बाइड इंडस्ट्री को पावर की कमी और पावर कट की उच्च प्रतिशतता 1996-97 में केवल कुछ समय के लिए थी और परिस्थिति नवम्बर, 1996 में सामान्य हो गई थी ।

11. यह तर्क ठीक नहीं है कि ग्रैडेयन एसीटिलिन ब्लैक मैन्युफेक्चर्स १ आई बी एम १ आई डी सी बी एम की जरूरतें पूरी करने में असफल रही जिसके कारण एकी के आयात में बद्देतरी हुई है क्योंकि न तो सेकां और न ही पैन्यम को सप्लाई के आर्डर के साथ आई डी सी बी ने सम्पर्क किया और एक भी आदेश के अनुसार सप्लाई न करने या आदेश निरस्त करने का मामला था । यह सच है कि आई ए बी एम द्वारा पुराने तरीके से बनाए गए ए बी प्रमुद्रपार सप्लाईर्स से आई ए बी की कीमत प्राप्त नहीं कर सके । आई डी सी बी एम की घेरेलू प्राप्ति की कमी से आई ए बी एम के आपरेशन अलाभकारी स्तर पर पहुंच गये ।

12. मैसर्स जीप ने ग्राम्य में वर्ष 1990 में भारतीय मानक नमूनों के अनुसार बनी और सेंका द्वारा सप्लाई की गई ए.डी. को निरस्त कर दिया था । उन्होंने उस माल को वापस करने में काफी समय लिया जो कि पूर्ण रूप से ठीक था और जिसे दूसरे ग्राहकों को बेचा गया था । उन्हें बताया गया था कि सेंका के माल की अतिम फिनिशिंग लोडेस्ट्री पर आधारित थी जो कि मुख्य ग्राहक मैसर्स आई एन एल की जरूरत थी ।

जीप के दो विनिर्माण संयंत्र हैं, एक इलाहाबाद में दूसरा मैसूर में । जबकि वर्ष 1996 में इलाहाबाद संयंत्र ने गुणवत्ता संबंधी कोई समस्या नहीं उठाई । मैसूर संयंत्र ने शिकायत की कि सेंका की एकी की गुणवत्ता उनकी विशिष्टियों को पूरा नहीं करती । इससे यह स्पष्ट हो गया कि एक ही कम्पनी में एक ही प्रकार का उत्पाद बनाने वाले का अपुष्ट स्वीकार स्तर मिल्न है जबकि ऐसा हो नहीं सकता । जीप आयात करने हेतु प्रतिष्ठित था तथा घेरेलू उद्योग से माल न खरीदने के लिए कोई बहाना चाहता था उन्होंने कुल स्थानीय को कम कर दिया क्योंकि आयातित एकी का भंडार बढ़ रहा था ।

13. टेसल ने भी एप्पन उत्पादन को गुणवत्ता को स्थापित किया है जैसा कि पुस्तक "टेक्नोलॉजी इन शीड़िया, इसीटीलीन ब्लैक इंडस्ट्री- एक रिपोर्ट जो कि विदेशी सहयोग के नेशनल रजिस्टर के अधीन भारत सरकार वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान अगस्त-1988 से तैयार की गई है- के पृष्ठ सं- 22, 26 ऐरा 3.05 और पृष्ठ 68 ऐरा 6.06 से देखी जा सकती है ।

14. कैल्सियम कार्बाइड के निर्माण में पावर के उपभोग को घटकर टेसल द्वारा 1996-97 में एप्पी के उत्पादन की लागत 1,27,576 रुपये से कम करके 1,10,146 रुपये कर दी गई थी ।

15. पावर उपभोग की थोड़ी उच्च दरों के बावजूद पैन्यम और टेसल द्वारा कैल्सियम कार्बाइड की विनिर्माण लागत प्रभावी पायी गयी है । सेंका भी साउथ शीड़िया में प्रतिष्ठित स्त्रोत से उचित मूल्य पर कैल्सियम कार्बाइड खरीद रहा है ।

16. टेसल हाइड्रोपावर परियोजना लगाने की प्रक्रिया में है । पैन्यम और सेंका पेट्रोकेमिकल्स काम्पलेक्सज से एसीटीलीन गैस प्राप्त करने की सोश रहे हैं जिसमें नैचुरल गैस का प्रयोग करते हुए श्यार्टीन का विनिर्माण होगा जिसमें एसीटीलीन गैस सभ उत्पाद की तरह छोड़ी जाती है । यह तर्क कि प्रतियोगिता से यह सम्योजन संभावित नहीं है, निराधार है ।

17. एप्पी की वजन के अनुसार पत्तन पर उतारने की लागत ₹पत्तन निकासी के पश्चात ₹ 1994-95, 1995-96, 1996-97 के दौरान हमेशा उच्च रही है सिर्फ 1997-98 में ओवरसीज सप्लाइरों के द्वारा मूल्यों में गिरावट के कारण कम हुई । मूल्य स्तर इस अवधि के दौरान अमरीकी डालर 2400 प्रति मी.टन से अमरीकी डालर 1700 प्रति मी.टन तक नीचे आ गया था ।

18. मैसर्स आई पन पल का यह विचार तर्कसंगत नहीं है कि जिंक के मूल्य में बढ़तती के आधार पर 95000 रुपये प्रति मी.टन तक मूल्य में कमी की जाये, क्योंकि जिंक मूल्य काफी कम हो गए हैं और इसका प्रभाव 1998-99 के दौरान महसूस किए जाने की संभावना है ।

19. पैन्यम ने जनवरी 1998 के बाद अपना उत्पादन बंद कर दिया है ।

20. 1996-97 में आयात लगभग 1100/ तक बढ़ गया था और ए एप्पी के आयात में यह प्रवर्ति 1997-98 में जारी रही क्योंकि 1997-98 में आयात 1640 मी.टन तक ऊपर उठा । 1997-98 ₹अप्रैल-सितम्बर] के प्रथम 6 मास के दौरान आयात 625.38 मी.टन था ।

21. 1997-98 में घरेलू निर्मित एप्पी की बिक्री में 2001 मी.टन तक की गिरावट आई और घरेलू उत्पादकों का लाभ समाप्त हो गया ।

22. घरेलू उधोग पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में है । सेंका और पैन्यम कैल्सियम कार्बाइड के बजाए हाइड्रोकार्बन तरिके से एप्पी के निर्माण की संभावना का पता लगा रहे हैं और टेसल हाइड्रोइलेक्टिकल पावर को कैपटिवली जेनरेट करने की कोशिश कर रहे हैं जिससे उत्पादन की लागत कम होनी चाहिए

23. घेरेलू उत्पादकों ने अनुरोध किया है कि कैल्जियम से नियति किया गया उत्पाद इस आधार पर बाहर नहीं किया जाना चाहिए कि इसका अर्णन कंडक्टिव कार्बाइड के रूप में किया गया है जात हो कि यह व्यापारिक और तकनीकी रूप से पब्ली का विकल्प है।

24. ट्रेसिल में श्रम और पावर समस्या असिष्याप्त थी। एक बार उन्होंने 1996 में सामन्य उत्पादन शुरू किया तो उनके पास काफी भंडार हो गया था क्योंकि जब उन्होंने लिंगित में आफर भेजी तो इसे द्वाह सेल बैटरी मैन्युफैक्चरर्स द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था।

25. मद डम्पिंग का रक्षोपाय आवेदन में जेनरिक सेन्स में प्रयोग किया गया। डम्पिंग का तकनीकी भाव में प्रयोग नहीं था।

26. भारत में एबी के निर्माण पर साइरीटीफ़िक और इंडस्ट्रियल रिसर्च विभाग की रिपोर्ट 1988 की रिपोर्ट है और इस पर आज के संदर्भ में अवलम्बित नहीं रहा जा सकता है क्योंकि तब से आज तक बहुत मानवण्ड बदल गए हैं।

27. ट्रेसिल कैल्जियम कार्बाइड कैटेटिव उत्पादक है और इसी तरीके से भी पब्ली का निर्माण जारी रखेगा।

28. कैल्जियम कार्बाइड और एबी दोनों अलग-अलग उत्पाद हैं और इनका घेरेलू निर्माण किया जाता है और कैल्जियम कार्बाइड के साथ जुड़े मुद्रों को एबी के मुद्रों के साथ मिलाना नहीं चाहिए।

29. जब तक एबी पर रक्षोपाय शुल्क नहीं लगाया जाता तब तक एबी के घेरेलू निर्माता अपनी पुनर्संरचना को सुगम बनाने के सभी सरीके को लागू करने की स्थिति में नहीं होंगे।

30. विनिर्माण का तरीका यथा पेट्रोकेमिकल्स के द्वारा या कैल्जियम कार्बाइड रूट से अलग-अलग होते हुप भी नियतिकों का सी आई एफ मूल्य एक जैसे है इसलिए रूट के आधार पर अन्तर करना आवश्यक नहीं है।

31. आयातित एबी के मूल्य में कमी वर्धित आयात का मुख्य कारण था।

32. घेरेलू उद्योगों ने अपने संयंत्रों के सम्मानों के लिए योजनाएँ बनाई हैं। ट्रेसिल उलूकंल हाइड्रोजनिकल संयंत्र की स्थापना कर रही है जो कि 80% से अधिक पूर्ण हो गया है। ट्रेसिल ने उत्पादन सुविधाओं के आधुनिकीकरण और बृद्धि, 3600 ट्रीपीए की स्थापित क्षमता बढ़ाने के लिए ३० कैडब्रिंजीनियारंग आस्ट्रेलिया के साथ सहयोग किया है। सेंका और पन्थम ने संयुक्त रूप से कैमिकल्स और फर्टिलाइजर्स मंत्रालय के पास उनकी रिफ़ाइनरीज से परसीटिलीन ग्राप्ट करने के लिए योजना प्रस्तुत की है। उन्होंने एक योजना गोपनीय आधार पर भी प्रस्तुत की है।

४८. उपभोक्ताओं/आयातकों के विवरण :-

8. एबी के उपभोक्ताओं/आयातकों ने निम्नलिखित दृष्टिकोण व्यक्त किए हैं:-

1. 1996-97 की वास्तविक स्थिति से तुलना की जाय तो 1997-98 में इसी वर्षता मात्रा में भारत में एकी का आयात नहीं हुआ है। वर्ष 1997-98 के प्रथम चार माह में 250.57 मी.टन का आयात था जो कि इसी अवधि में 1996-97 में 280 मी.टन के अनुमानित आयात से कम था।

2. क्योंकि प्रतिशत के आधार पर एकी के आयात में घेरेलू उत्पादन की अपेक्षा 1996-97 में 25.68% से 1997-98 में 29.54 अर्थात् केवल 4% की वृद्धि हुई, इस वृद्धि को बढ़ी मात्रा में नहीं माना जा सकता। एकी के आयात में वृद्धि न तो मूल रूप हुई और न ही घेरेलू उत्पादन के साक्षेप में और धारा 8वीं लगाने हेतु मूलभूत स्थिति का सन्तोष नहीं होता। 1994-95 और 1995-96 के संदर्भ में वर्धित आयात के निर्धारण से ही इस गलत निष्कर्ष पर पहुंचना पड़ा।

3. उत्पादन के क्षति विश्लेषण, क्षमता उपयोगिता आदि इन तथ्यों से व्यर्थ याने जा सकते हैं कि इन पर 1994-95, 1995-96 के वर्षों के संदर्भ में विचार किया गया है जैसाकि एकी के घेरेलू उत्पादकों द्वारा हुई प्रेरणानी के कारण 1996-97 में एकी का प्रथम बार आयात शुरू हुआ, उत्पादन, बिक्री, मार्केट शेयर में कमी आदि के बारे में मात्र 1996-97, 1997-98 के संबंध में अध्यन करना होगा।

4. हालांकि घेरेलू उत्पादकों का पसीटिलीन ब्लैक का उत्पादक 1995-96 में 3570 मी.टन से 1996-97 में 3275 मी.टन तक गिर गया था लेकिन एक महीने रखरखाव के कारण पैन्यम संयंत्र के बंद होने के बाद भी उनका उत्पादन 1995-96 में 1922 मी.टन से 1996-97 में 1949 मी.टन तक बढ़ था। सेंका का उत्पादन 1996-97 में 440 मी.टन से 630 मी.टन तक बढ़ गया था और ओसवाल का उत्पादन 206.25 मी.टन के पिछले साल के उत्पादन की तुलना में 221.65 मी.टन अधिक रहा था। इस प्रकार चार घेरेलू उत्पादकों में से तीन उत्पादकों ने 1996-97 में एकी के उत्पादन में वृद्धि दर्शायी। यह केवल चौथे उत्पादक यथा :- टैसिल के मामले में है कि उनका उत्पादन 1031.8 मी.टन से 473.93 मी.टन तक गिरा। टैसिल में उत्पादन में गिरावट गम्भीर पावर कट और कर्मचारियों की हड्डिताल के कारण आई थी इसलिए टैसिल में उत्पादन में गिरावट कथित वर्धित आयात के कारण नहीं हुई।

5. क्षमता उपयोगिता में गिरावट मुख्यतः 1997-98 के प्रथम छमाही में 14% तक की प्रत्यक्ष मांग में कमी के कारण है और क्षमता उपयोगिता में लगभग 6% की बढ़तरी और टैसिल में पावर कट की समस्या और श्रम समस्या के कारण है और न कि वर्धित आयात के कारण। 1996-97 में 21.8% से 1997-98 में 22.81% की वृद्धि यानि कि 1% आयात मार्किट शेयर में वृद्धि को घेरेलू उपयोग को गम्भीर क्षति जिसके कारण समग्र रूप से छानि नहीं माना जा सकता।

6. घेरेलू उपयोग को क्षति उनकी स्थिति की देन है क्योंकि कम क्षमता उपयोगिता के बावजूद उन्होंने 5300 मी.टन से 5600 मी.टन तक की क्षमता उपयोगिता में वृद्धि की। घेरेलू उपयोगों के लिए वर्धित आयात और गम्भीर क्षति में सामान्य तात्पत्य का अभाव रहा।

7. मैसर्स आई पन पल से सेंका दारा प्राप्त गुणवत्ता प्रमाणपत्र 1997-98 में जांच की वर्तमान अवधि के बहुत पहले की स्थिति है। 1997 में मै0 जीप दारा सेंका को सूचित गुणवत्ता समस्या के बारे में प्रारंभिक निष्कर्ष में डीजी दारा विचार नहीं किया गया है। घरेलू उद्योग ने डिपार्टमेंट और साइटिफिक और इंडस्ट्रियल रिसर्च की रिपोर्ट में की गई सिफारिश के अनुसार कैरिसयम कार्बाइड रुट को छोड़कर छाइडो कार्बन रुट से एबी के निर्माण के लिए कोई कार्रवाई नहीं की। घरेलू उत्पादकों ने स्वयं कहा है कि सेंका को कैरिसयम कार्बाइड रुट के जरिए प्रभावी लागत प्राप्त नहीं होगी। प्रश्न यह भी है कि क्या सेंका और पैन्यम दारा किसी पेट्रोकेमिकल्स उद्योग से एक प्रभावी तरीके से पसीटिलीन प्राप्त करना सम्भव था।

8. ओसवाल, एक अकेला उत्पादक है जो कि अपनी स्थापित क्षमता के 25/ से अधिक उपयोग न करते हुए पेट्रोकेमिकल्स रुट का प्रयोग कर रहा है, उनकी एबी की उत्पादन की लागत घरेलू उत्पादकों से लगभग 20,000/- रुपये कम है। वर्तमान सीमा शुल्क दृढ़ती पर आयातित एबी का वर्तमान लैपिड भूल्य, ओसवाल के विक्रय भूल्य से तुलनात्मक लाभदायक है। इस प्रकार आयातित एबी ओसवाल के अलावा अन्य घरेलू विनिर्माताओं की कीमतों को प्रभावित नहीं करती।

9. एबी के घरेलू उत्पादक कैरिसयम कार्बाइड की डम्पिंग, पावर की अनुपलब्धता और पावर की उच्च लागत के बारे में शिकायत कर रहे हैं और आवश्यकता से अधिक क्षमता होने के कारण वह अधिकतम क्षमता उपयोगिता प्राप्त नहीं कर पाते यदि घरेलू उत्पादक स्वयं को इस प्रतिस्पर्धा के साथ समायोजित नहीं कर सकते हैं तो रक्षोपाय शुल्क लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

10. यह भूल्य जिस पर उत्पाद का आयात होता है रक्षोपाय कार्रवाई के लिए उस पर विचार नहीं किया जा सकता।

11. संस्तुत रक्षोपाय शुल्क लगभग यू.एस डालर 500 प्रति मी.टन या आयातित भूल्य यू.एस डालर 1800 का लगभग 28/ है। यह विधमान 35/ सीमा शुल्क दृढ़ती के अतिरिक्त है और यह कुल उद्ग्रहण 63/ हों जाएगा जिससे कि समस्त आर्थिक पुनर्संरचना व्यर्थ हो जाएगी। वक्त झकझ्यों की उत्पादन लागत के आधार पर उचित विक्री भूल्य की गणना की जानी चाहिए।

12. बैलिन्यम से नियमित उत्पाद एबी नहीं है यह आई ट्री सी के 28030003 के अधीन वर्गीकृत कार्बन है जो कि पसीटिलीन रुट से उत्पादित नहीं होता और इसलिए इसे वर्तमान जांच के द्वायरे से निकाल देना चाहिए।

13. 1995-96 में 3645 मी.टन से 1996-97 में 3858 मी.टन अर्थात् 213 मी.टन की घरेलू खपत में वृद्धि और ट्रेसेल का 558 मी.टन का उत्पादन का ड्रास अर्थात् दोनों 771 मी.टन है, जो कि 1995-96 की तुलना में 1996-97 में आयात में वृद्धि को स्पष्ट करता है।

14. एबी के कुल 4 घरेलू उत्पादक हैं जिनमें से 3 घरेलू उत्पादकों ने 1996-97 में उत्पादन में वृद्धि दर्ज की है और केवल एक घरेलू उत्पादक ट्रेसेल ने उत्पादन, विक्री आदि में नुकसान उठाया।

यह हालने विर्ति आयात के अलावा कारणों जैसे श्रम और पावर समस्या आदि के कारण हुआ था। यह घेरेलू उत्पादक रक्षोपाय कानून के अधीन परिभाषित घेरेलू उद्योग की परिभाषा के अनुसार अकेले घेरेलू उद्योग नहीं बनाता इसलिए रक्षोपाय शुल्क के लगाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती।

15. हाइब्रो कार्बन रूट से पसीटिलीन की प्राप्ति संभेदप्रद है। कैलिसयम कार्बाइड से संबंधित एंटी डिपिग आवेदन के संदर्भ में वो घेरेलू उत्पादकों ने बताया है कि भारत में पैट्रो केमिकल उद्योग में पसीटिलीन के जानकार विनिर्माता नहीं है। कैलिसयम कार्बाइड का कोई विकल्प नहीं है। इसलिए कुछ घेरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई समायोजन योजना भी सीधारथ है।

३८। नियांत्रिक/नियांत्रिक देशों के वृष्टिक्षेप :

9. पश्ची के नियांत्रिक/नियांत्रिक देशों की सरकारों ने निम्नलिखीत वृष्टिक्षेप घ्यक्त किए हैं:-

३९। कार्बोफिल :-

1. भारत के पश्ची के उत्पादक विजली की उच्च दरों के कारण ओवरसीज सप्लाइरों की तुलना में प्रतिस्पर्धात्मक नहीं है।

2. घेरेलू उत्पादकों के लिए आयात के विस्तर बढ़ाव की वर्तमान दर पर्याप्त है क्योंकि 1993-94 में ८५/ के स्तर से शुल्क घटकर सी जाई पफ मूल्य पर वर्तमान दर ३५/ है और 1996 तक जिन घेरेलू उत्पादकों के पास ९७/ तक के पश्ची के मार्केट शेयर ये उनके पास 1997 के दौरान भी ८५/ तक रोयर है।

3. कार्बोफिल से भारत को पश्ची का नियांत्रि 1996 के बाद आने हिस्से से प्रारम्भ हुआ। क्योंकि मुम्हई तक 40 फीट क्लेटर का भाव यू पस डालर 3600 से घटकर वर्तमान दर यू पस डालर 1050 हो गया। यू पस डालर और रैंड की विनिमय दर में भी रैंड ३.६३ प्रति यू पस डालर से रैंड ५.१० प्रति यू पस डालर यानि कि ४०/ का छास हुआ।

4. 1992 से कार्बोफिल ने उत्पादन की लागत में भी सुधार किया है जिससे कि इसके घेरेलू मार्केट के रोयर बढ़े। कार्बोफिल में भारतीय बाजार के लिए कोई पक्षपातपूर्ण मूल्य नहीं बद्दल प्रति

5. स्थानीय कार्बोफिल माल का मूल्य यथा:- विजली, चूना और रिहेक्टन्स पश्ची के घेरेलू उत्पादकों को दर किनार किया। जहाँ वे विश्व श्रेणी के विनिर्माताओं से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते।

6. पश्ची पर रक्षोपाय शुल्क से भारतीय बैटरी उत्पादकों की स्थानीय बाजार में बैटरी के विक्री मूल्य बढ़ाने होंगे जिससे चाइना से कमज़ोर किस्म की बैटरी का विर्ति आयास होगा।

7. डेंका, ने पश्ची की कीमते कम कर दी थी कारण कि उसने सिंगापुर संयुक्त की क्षमता को 12000 मी.टन तक बढ़ा दिया और जापान संयुक्त में भी उत्पादन जारी रखा।

8. 1996 में एकी का मूल्य यू.एस डालर 1900 प्रति मी.टन अर्थात् 1 यू.एस डालर= 32.25 रुपये और वर्तमान मूल्य यू.एस. डालर 1800 प्रति मी.टन अर्थात् 1 यू.एस. डालर= 41.75, यह समुद्री भाव में भारी कमी के कारण मूल्य में कमी आई।

9. साधारणतया एकी नैफ्या या कैलिसयम कार्बाइड से प्राप्त होता है और यह कि कैलिसयम कार्बाइड से प्राप्त उत्पाद अच्छी गुणवत्ता का है।

10. यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि कैलिसयम कार्बाइड की उत्पादन लागत बहुत उचित है। जिससे एकी की लागत कम हो जाती है।

इम् प्रम सी सी आई कारपोरेशन :-

1. भारत में एकी के उत्पादन में कमी एकी के वर्धित आयात के कारण नहीं है। भारत में वर्तमान पावर समस्या के साथ साथ उच्च विजली वरों के कारण कैलिसयम कार्बाइड की सप्लाई को दुर्लभ और सर्वांगीन बना दिया जिससे उत्पादन में कमी हुई और परेलू उत्पादकों द्वारा घेरलू बाजार में एकी की अपर्याप्त सप्लाई के कारण एकी के आयात में वृद्धि हुई।

2. भारत में आयातित एकी के मूल्यों में जानबूझकर कमी करने की कोई इच्छा नहीं है और यह पूर्ण रूप से बाजार मूल्यों पर आधारित है। जबसे एकी के अंतराष्ट्रीय मूल्य कम हुए हैं, एक सी सी आई ने भी अपनी एकी के मूल्य कम कर दिये हैं लेकिन एक सी सी आई के मूल्य ठीक और सर्कसंगत हैं।

3. रक्षापाय शुल्क लगाने से इंडिसेल-बैटरी विनिर्माताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पहुँचा और उन्हें अपनी लागत बढ़नी पड़ी।

इग् डैका और डी सी पल :-

1. आयात की कुल वृद्धि की गणना केवल भारत में कुल खपत की वृद्धि की मात्रा को घटा कर करनी चाहिए। एकी के आयात की कुल वृद्धि एकी के उपभोक्ताओं द्वारा एकी की वर्धित मांग और परेलू विनिर्माताओं द्वारा मांग की और विशेष रूप से इंडिसेल-बैटरी विनिर्माताओं की मांग पूरी न करने के कारण है।

2. संरक्षनात्मक समस्या जैसे पावर और श्रम और परेलू उत्पादकों की अकुशलता के कारण परेलू उद्योग को गम्भीर झटि हुई या गम्भीर झटि होने की आशंका हुई है।

3. अनरिसम शुल्क की दर गलत है और न्यायोधित नहीं है।

4. अंतराष्ट्रीय मूल्यों में गिरावट के कारण आयातित एकी के मूल्यों में वर्ष 1996 के यू.एस डालर 2280 से वर्ष 1997 में 1970 यू.एस डालर की सुधम कमी हुई।

४७५ एम्बेसी आफ दी पीपल्स रिपब्लिक आफ चाईना ने सिर्फ भारत में एवं एवं के चाईनीज नियंत्रितकों और चाईना से एवं के भारतीय आयातकों की एक सूची मांगने के अलावा कोई विशिष्ट प्रस्तुति नहीं की है। सभी ज्ञात नियंत्रितकों/आयातकों से संबंधित सूचना पहले से ही आवेदन में उपलब्ध है।

४७६ दी रिपब्लिक आफ सिंगापुर जांच की गतिविधियों और प्रगति के बारे में अवगत होना चाहते थे तथा उनके विचार में अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क का लगाया जाना अनावश्यक था।

४७७ भारत में एवं के नियंत्रिक 06 वेशों के संयोजक होने के नाते साउथ अफीकन इकोनोमिक आर्फिस ने निम्नलिखित मुद्रे उठाप है :-

१. एवं के स्थानीय उत्पादकों द्वारा पावर कट श्रम समस्या तथा उत्पादन के पुराने तरीके जिससे एवं का उत्पादन कैरिश्यम कार्बाइड से जो कि नितान्त पनर्जी बहुल तरीका है, से किया जाता है जिससे वे सम्पूर्ण मांग को पूरा नहीं कर सकते थे जिससे एवं के आयात का प्रवाह शुरू हुआ।

२. क्षिति अभाव से घेरलू उत्पादन को कोई गम्भीर क्षति नहीं हुई क्योंकि ट्रेसिल को छोड़कर सभी निर्माताओं ने 1996-97 के बौरान अपना उत्पादन बढ़ाया। ट्रेसिल का कम उत्पादन श्रम और पावर समस्या के कारण था और आयात से उसका कुछ लेना देना नहीं था।

३. रक्षोपाय शुल्क का अधिरैण भारतीय उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के अयोग्य बनाएगा।

४८१ भारत में एम्बेसी आफ फ्रांस :-

१. क्षति की गम्भीरता स्थापित नहीं होती क्योंकि भारतीय उद्योग का मार्केट शेयर ऊँचा बना रहा है ८०% के आसपास है और घेरलू उत्पादन एक विचारणीय अद्यति के ऊपर स्थिर रहा।

२. आयातित एवं के मूल्य में महत्वपूर्ण कमी केवल अप्रैल 1997 के पश्चात् हुई जबकि आयात में दृष्टि एक वर्ष पहले शुरू हुई थी।

३. भारतीय उद्योग उत्पादन की अति क्षमता और तकनीकी अन्तर से प्रभावित हो रहे हैं।

४८२ भारत में एम्बेसी आफ जापान :-

१. चारों भारतीय उत्पादकों में से जिन्होंने रक्षोपाय उपाय के लिए आवेदन किया है, केवल एक उत्पादक ने जांच की अद्यति के दौरान अपने उत्पादन में गिरावट का अनुभव किया है। ऐसी परिस्थितियों के अधीन करारनामा के अनुच्छेद ४१ के लिए भारतीय रक्षोपाय उपायों को लगाने की सार्थकता संवेद्धास्पद है।

2. घेरलू उद्योग की गम्भीर क्षति या गम्भीर क्षति होने की आशंका का निर्धारण करने के लिए न केवल घेरलू बाजार में आयातित उत्पाद का शेयर और विक्री और उत्पादन का स्तर वहिक सभी संगत तथ्य जिसमें "उत्पादकता कमता उपयोगिता, लाभ और डाइन और रोज़गार" आदि है, के आधार पर मूल्यांकन करना चाहिए। चार में से तीन घेरलू उत्पादकों ने अपना उत्पादन बढ़ाया अतः इसमें संवेद है कि घेरलू उद्योग को गम्भीर क्षति या क्षति की आशंका है।

3. उत्पाद के वर्तित आयात और गम्भीर क्षति या गम्भीर क्षति होने की आशंका के बीच आकर्षित संबंध को यथार्थ साक्षों के आधार पर सिद्ध किया जाना चाहिए। एकी के आयात में अभी तुर्हि बृद्धि का कारण भारतीय घेरलू उद्योगों की अपनी समस्याएँ, जिसमें विजली की सप्लाई का न होना, श्रम विद्याद, अप्रतिस्पष्टतामिक होना, और अपनी दक्षता बढ़ाने के लिए देरी से किए गए उपाय रहे हैं।

4. 19,500 रु. प्रति मी.टन की दर से अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क क्या पक्षी के कुल शुल्क के रियायतों की अनुसूची के अधीन दिए स्तर से बढ़ जायेगा। भारत को रक्षोपाय पर करारनामे के अंतर्गत जांच अधिसूचना तथा परामर्श की अपनी इयूटी को पूरा करना होगा।

इमरु डी जी के निष्कर्ष

10. मैंने मामले के अभिलेखों तथा इच्छुक पक्षों की दलीलों को देखा। विविन्न पक्षों वारा उठाए गए मुद्दों पर निम्न निष्कर्षों में उचित स्थान पर विचार किया है :-

जांच के अधीन उत्पाद

जांच के अधीन पसीटिलीन ब्लैक [पक्षी] उत्पाद है। पक्षी एक बेजोड़ किस्म का कार्बन ब्लैक है। यह रोयेवार है और इसका घनत्व 19 किं.ग्रा. प्रति क्यूबेक प्रति मी.टन है। यह विशुद्ध किस्म का कार्बन ब्लैक है यह वाणिज्यिक ब्लैकस की अंति क्रिस्टेलाइन है और लो सरफेस ऑक्टिविटी का उत्पाद है। कम माइक्रो विलयन, उच्च तरल [पसीटेन, पच सी आई] विलयन और उच्च विजली और थर्मल कंडक्टिविटी वाला उत्पाद है। इसी सेल में प्रयोग होने वाले मैग्नीज डायआक्साइड की कंडक्टिविटी को सुधारने के लिए पक्षी का मुख्य स्प में प्रयोग होता है। विवरों में रबड़ हीटर पेड़, हीटर टेप, पंटीस्टेटिक बेल्ट इर्झिव्स और जूते के सोल बनाने में भी काम में आती है। यह हवाई जहाज के द्वारा भी बनाने में भी काम आती है। निर्माण को प्रक्रिया में मुख्यतः कम पसीटिलीन का जेनरेशन, इसका शुद्धकरण और इसकी पक्षी के लिए थर्मल डी कम्पोजिशन शामिल होता है। पक्षी को सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 2803.00 के अधीन वर्गीकृत किया गया है जो कि कार्बन [कार्बन ब्लैक और कार्बन की अन्य किसी जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट या शामिल नहीं है को कवर करता है। भारतीय व्यापार वर्गीकरण [आई.टी.सी.] जो कि [हारमोनाइस्ट] कमोडिटी डिस्काउंटन [के ऊपर आधारित है, शीर्ष को तीन उप वर्गीकरणों में बांटा है यथा 28030001- पसीटिलीन ब्लैक कार्बन, 28030002 रबर उद्योग के लिए कार्बन ब्लैक और 28030009 कार्बन ब्लैक जो अन्यत्र विनिर्दिष्ट नहीं है। वर्तमान जांच पसीटिलीन ब्लैक से संबंधित है जो कि सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की प्रथम अनुसूची के शीर्ष 2803.00 के

अधीन वर्गीकृत है। तथापि यह उल्लेखनीय है कि उपरोक्त वर्गीकरण केवल व्याख्या के प्रयोजनार्थ है और किसी भी रूप में जांच के अधीन उत्पाद के क्षेत्र को प्रतिबोधित नहीं करता।

12. भारत में पब्ली का विनियमन कैलिशयम कार्बाइड तरीके से तथा पेट्रोकेमिकल्स यथा हाइड्रोकार्बन रुट से होता है। कैलिशयम कार्बाइड रुट में पब्ली कैलिशयम कार्बाइड के साथ पानी की प्रतिक्रिया द्वारा तैयार किया जाता है। भारत में कैलिशयम कार्बाइड के तरीके से तैयार पब्ली पेट्रोकेमिकल्स तरीके से तैयार पब्ली से मंडगा है। घेरेलू उत्पादित पब्ली आयातित पब्ली की तरह एक जैसे प्रयोजन के लिए काम में आता है और पस जी डी नियमावली के अर्थों में आयातित पब्ली की तरह का ही पदार्थ है।

13. उपभोक्ताओं/आयातकों ने दावा किया है कि बैलिजयम से आयातित उत्पादन पब्ली न होकर कंड्यूटिव कार्बन है। यह प्रस्तुत किया गया है कि मै ० एम.एम.एम.एस.प.बैलिजयम ने इस नये उत्पाद का विकास किया है और इसे बाजार में परीक्षण के रूप में पब्ली के कम लागत प्रतिस्थापन के रूप में परीक्षण किया जा रहा है। यह एसीटिलीन से विनिर्मित नहीं होता और इसीलिए वर्तमान जांच के दायरे से इसे बाहर निकाल देना चाहिए। तथापि कोई बात विस्तार में प्रस्तुत नहीं की गई कि यह कैसे बनाया जाता है और पब्ली से किस प्रकार भिन्न है।

14. यह देखा गया है कि बैलिजयम से आयातित उत्पाद यथा संचालक [कंड्यूटिव] कार्बन ड्राई सेल बैटरी विनियाताओं द्वारा आयात किया जाता है और वस्तावेजों में "कार्बन ब्लैक सुपर पी" के रूप में वर्णित है और उसी प्रयोजन के लिए प्रयोग किया जाता है यथा ड्राई सेल बैटरी के विनियम में यह कियात्मक और वाणिज्यिक रूप में पब्ली का विकल्प है। पब्ली में व्यापार करने वाले व्यक्ति पब्ली और संचालक कार्बन के बीच कोई अन्तर नहीं भानते जैसा कि मै ० इंडोनेशनल लिमिटेड द्वारा प्रश्नावली के जवाब में प्रस्तुत किए गए उत्तर से स्पष्ट होता और जो बैलिजयम सामग्री के आयातक है, जिसे यथावत नीचे प्रस्तुत किया गया है :-

१क)	आयातित उत्पाद का नाम :	एसीटिलीन ब्लैक
१ख)	उत्पाद का विवरण विभिन्न	१क) एसीटिलीन ब्लैक [डैंका] ५०/ कम्प्रेशन श्रेणियों सार्बज, मॉडल्स या १ख) कार्बन ब्लैक - सुपर "पी"
	टाइप आदि	१ग) एसीटिलीन ब्लैक [चाइना]

उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि कार्बन ब्लैक सुपर पी के उपभोक्ताओं ने स्वयं प्रस्तुत किया है कि यह उत्पाद पब्ली है। वाणिज्यिक, कियात्मक और उपभोक्ताओं के प्रत्यक्ष ज्ञान से कार्बन ब्लैक सुपर पी तथाकीयत कंड्यूटिव कार्बन पब्ली की तरह है जो कि वर्तमान जांच की विषयवस्तु है।

15. यह भी महसूस किया जाता है कि आयात आंकड़ों के संकलन में महानिवेशक वाणिज्यिक आसूचना और सार्विकी [डी.जी.सी.आई.एस.] कलकत्ता ने बैलिजयम से आयातित कार्बन ब्लैक को वर्गीकरण २८०३०००९ के अधीन वर्ज किया है जो कि कार्बन ब्लैक एन ई एस से संबोधित है। तथापि इस वर्गीकरण के अधीन कार्बन ब्लैक का प्रति मी.टन मूल्य १३७ प्रांत किंग्रा. की रेंज में

है, जबकि बैंगियम के माल को 66रु. प्रति किलोग्राम की रेंज में वर्ज किया गया है एवं उपभोक्ताओं/आयातकों द्वारा प्रस्तुत आयात वस्तावेजों की प्रतियों से यह भी महसूस किया जाता है कि कंड्यूटिव कार्बन के मूल्य या कार्बन ब्लैक सुपर पी के मूल्य यूपस डालर 1800 पीएमटीसी आई एफ के स्तर पर है। रबर इंडस्ट्री के लिए कार्बन ब्लैक का मूल्य 20 रु. प्रति किलोग्राम की रेंज में है। और एसीटिलीन कार्बन ब्लैक का मूल्य रु. 69/- प्रति किलोग्राम की रेंज में है। कंड्यूटिव कार्बन का मूल्य लगभग रु. 66/- प्रति किलोग्राम। रबर उद्योग या अन्य प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त कार्बन ब्लैक के मूल्य के काफी पीछे हैं और इर्द्दी सेल बैटरी के विनिर्माण में प्रयोग में आने वाले पश्ची के मूल्य के तुलना योग्य हैं।

16. उपरोक्त की वृष्टि से कंड्यूटिव कार्बन जांचार्धीन उत्पाद के बायरे से बाहर रखने योग्य नहीं हैं और सभी एसीटिलीन ब्लैक कार्बन जिसमें बैंगियम का कार्बन ब्लैक सुपर पी, कार्यत कंड्यूटिव कार्बन शामिल हैं जांच के अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

17. घेर्लू उद्योग

प्रारंभिक निष्कर्ष में दिए गए घेर्लू उद्योगों से संबंधित पैराग्राफ 5(4)(i) के निष्कर्ष पुष्ट किए जाते हैं।

18. वार्षिक आयात :-

भारत में पश्ची का आयात दशक 1970 के आखिर और दशक 1980 के शुरू से हो रहा था। फिर भी दशक 1980 के मध्य से 1996 के शुरू तक व्यवहारिक रूप में बढ़त कम मात्रा में आयात हो रहा था। जांच के अधीन अवधि के दौरान आयात 1994-95 में 8.3 मी.टन से 1995-96 में 71 मी.टन हुआ और 1996-97 में बढ़कर 1169.42 मी.टन हो गया। पश्ची के आयातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के सत्यापन से यह पाया गया है कि आयात 1996-97 में 841.04 मी.टन की बजाय 1169.42 मी.टन था। 1997-98 के प्रथम छ: माह । अप्रैल-सितम्बर । में आयात 625.30 मी.टन हो चुका है। संगत अवधि के दौरान घेर्लू उत्पादन क्रमशः 3355.43 मी.टन 3570.75 मी.टन 3274.62 मी.टन और 1272.25 मी.टन रहा है। घेर्लू उत्पादन की तुलना में आयात 1994-95 में 0.24%, 1995-96 में 1.98% 1996-97 में 35.7% और 1997-98 । अप्रैल-सितम्बर । में 49.16% रहा। इस प्रकार जांच के अधीन अवधि के दौरान घेर्लू उत्पादन की तुलना में और मूल रूप में दोनों तरह से आयात बढ़ रहा है।

19. उपभोक्ताओं/आयातकों ने दावा किया है कि 1994-95 और 1995-96 के दौरान आयात केवल अल्प मात्रा में हुआ और वास्तविक आयात का प्रथम वर्ष 1996-97 था लेकिन तथ्यों की रोशनी में वह एक असाधारण वर्ष था क्योंकि चार घेर्लू उत्पादकों में से एक यथा में ट्रैसिल पावर और श्रम समस्या के कारण एक काफी समय तक बंद थी। इस प्रकार आयात घेर्लू उत्पादन में कमी और बढ़ी इर्द्दी घेर्लू मांग को पूरी करने के उद्देश्य से किया गया था।

20. इस संबंध में यह महसूस किया जाता है कि आयात में बढ़ोतरी के लिए उस अवधि पर विचार करना चाहिए जिसके लिए डी.जी.दा.रा. 26 सितम्बर 1997 को जारी व्यापार सूचना सं-परस्जी/ट्रिपन/1/97 के अधीन जांच प्रारम्भ होने के तत्काल पहले के जिसके आंकड़े उपलब्ध हैं, ताल ढी के विवर 3 वर्षों या अधिक की अवधि का समय विनिर्दिष्ट किया है। इसलिए वर्तमान जांच में जांच की अवधि 1994-95, 1995-96, 1996-97 और 1997-98 के प्रथम छ: मास ठीक लिए गए हैं जिसके लिए आंकड़े आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए थे और अधिकारियों की द्विम द्वारा सत्यापित किए गए थे। इन वर्षों के दौरान आयात दुआ या नहीं यह विशेषतया असंगत होगा क्योंकि आयात का मूल्यांकन पूरी अवधि के तुलनात्मक आधार पर किया जाना है। यदि किसी वर्ष में आयात नहीं दुआ या थोड़ी मात्रा में भी आयात नहीं दुआ तो इस आधार पर इस वर्ष को अनदेखा नहीं किया जा सकता। समग्र रूप से आयात में खुदिं के लिए पूर्ण अवधि पर विचार कर किसी नतीजे पर पहुँचा जा सकता है कि क्या इस अवधि के दौरान आयात बढ़ा है? इस मामले में जवाब स्पष्ट रूप में संक्षरणात्मक है।

21. गम्भीर क्षति :

गम्भीर क्षति के लिए उत्पादकारी विभिन्न तथ्यों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि घेरलू उत्पादन 1995-96 में 3570.075 मी.टन से 1996-97 में 3274.62 मी.टन और 1997-98 के प्रथम छ: मास यानि कि अप्रैल-सितम्बर 97-98 में 1272.25 मी.टन तक गिर गया था। इस प्रकार घेरलू उद्योगों के उत्पादन में 1995-96 की तुलना में 1996-97 में 8.20%, 1996-97 की तुलना में अप्रैल-सितम्बर 1997-98 में अनुपातिक आधार पर 22.3% और 1995-96 की तुलना में 28.86% की कमी दुई। इसी प्रकार घेरलू उद्योग को 1995-96 में 63.75% से 1996-97 में 58.46% और 1997-98 के प्रथम छ: मास में 45.42% की क्षमता उपयोगिता में कमी का सामना करना पड़ा। घेरलू उद्योगों की विकी में भी 1995-96 में 3574 मी.टन से 1996-97 में 3017 मी.टन की कमी हो गई जो कि आगे घट कर 1997-98 के प्रथम छ: मास में 1291 मी.टन रह गई। प्रतिशत के रूप में घेरलू उद्योगों की विकी में भी 1995-96 की तुलना में 1996-97 में 15.58%, 1996-97 में तुलनात्मक अनुपातिक आधार पर 1997-98 के प्रथम छ: मास में 14.42% और अनुपातिक आधार में 1995-96 की तुलना में 27.76% की कमी आई। प्रकट खपत में भी घेरलू उद्योगों के अपने मार्केट शेयर में कमी दुई अर्थात् ये 1995-96 में 98.05% से 1996-97 में 71.8% और 1997-98 के प्रथम छ: मास में 67.38% हो गई। आयात ने जिस हिस्से पर कहा किया वह निरन्तर बढ़ता चला गया अर्थात् 1995-96 में 1.95% से 1996-97 में 28.2% तथा 1997-98 के प्रथम 6 मास में 32.62% हो गया। उसी समय घेरलू उद्योगों की सामाजिक सूची भी 1995-96 में 50.71 मी.टन से 1996-97 में 308.12 मी.टन और 1997-98 के प्रथम छ: मास की समाप्ति पर 226 मी.टन हो गई घेरलू उद्योगों ने उत्पादकता प्रति व्यक्ति उत्पादन के साथ-2 उत्पादन में कमी का नुकसान भी उठाया क्योंकि उन्होंने अपने कर्मचारियों की संख्या में कमी किए और उत्पादन जारी रखा।

22. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम 1995 के द्वारा 8 भी के अनुसार गम्भीर क्षति का अर्थ है कि घेरलू उद्योगों की स्थिति में महत्वपूर्ण समग्र हानिकरण। यह विकी, उत्पादन, क्षमता उपयोगिता, रोजगार आदि के स्तर में परिवर्तन का परिणाम है। उद्देश्यपूर्ण मूल्यांकन के लिए यदि सभी तथ्यों को

एक साथ मिला किया जाये और यह स्पष्ट हो जाये कि घेरलू उद्योग पर कुछ अंश तक प्रतिकूल प्रभाव अवश्य पड़ा है, अर्थात् गम्भीर क्षति हुई है। जांच के अधीन इस मामले में यह देखा गया है कि घेरलू उत्पादन जो कि 1994-95 में 3355.43 मी.टन से 1995-96 में 3570.07 मी.टन के उच्च शिसर पर पहुँच गया था वह 1996-97 में और उसके बाद 1997-98 में बुरी तरह गिर गया। यही प्रवृत्ति क्षमता उपयोगिता के साथ-2 घेरलू बिक्री और प्रकट स्पष्ट में घेरलू उत्पाद के अंश में भी दिखाई पड़ती है। घेरलू उद्योगों को उत्पादन की लागत में बढ़तरी के साथ-2 बिक्री में कमी का सामना करना पड़ा जिसके कारण हानि हुई। कुछ घेरलू उत्पादकों का उत्पादन बंद करना पड़ा और दूसरों के मामलों में श्रम दिवसों की हानि उठानी पड़ी। अपर्याप्त आर्डरों के अभाव में पर्याप्त को अपना संयंत्र 10 अप्रैल, 1997 से 2 जून 1997 तक बंद करना पड़ा। इसी प्रकार ग्राहकों वारा कुल खरीद न होने के कारण सेंक ने सितम्बर, 1997 में एवी का उत्पादन नहीं किया। इन सभी स्थिरों को एक साथ रखने से पता चलता है कि घेरलू उत्पादकों को उत्पादन में कमी, बिक्री में कमी, भंडार में बढ़तरी, क्षमता उपयोगिता में कमी रोजगार में और लाभ में कमी का सामना करना पड़ा जिससे स्पष्ट है कि घेरलू उद्योगों को जांच की अवधि के बीच गम्भीर क्षति का सामना करना पड़ा।

23. कारणात्मक संबंध :

जैसा कि ऊपर महसूस किया गया है कि घेरलू उद्योगों को गम्भीर क्षति का सामना करना पड़ा तथापि मुख्य प्रश्न यह है कि गम्भीर क्षति का सामना करने के लिए वर्धित आयात जिम्मेदार है या घेरलू उद्योगों वारा स्वयंप्रवर्त्त क्षति है जैसा कि कुछ इच्छुक पक्षों वारा विश्वार व्यक्ति किया गया है। इस संबंध में एक मुख्य मुद्दा, जिसका जिक्र किया जाना आवश्यक है, वह है वर्ष 1996-97 में ट्रेसिल वारा श्रम और पावर समस्या का सामना करना। यह दावा किया गया है कि ट्रेसिल के यहाँ 1996-97 में 76 दिनों तक बिजली उपलब्ध नहीं थी और पिछले 5 मास से वह 30% और 70% के बीच बिजली कटौती का सामना कर रहे थे। उन्होंने लगभग 48 दिनों तक श्रम समस्या का सामना किया। यह व्यक्त किया गया है कि इहाँ समस्याओं का प्रभाव रहा कि ट्रेसिल 124 दिनों तक बंद रही और 46% की उत्पादन में हानि हुई। दूसरी ओर घेरलू उत्पादकों ने प्रस्तुत किया है कि यह वास्तविकता नहीं है कि ट्रेसिल 124 दिनों तक बंद रही क्योंकि बिजली और श्रम समस्या एक दूसरे से साथ-साथ थीं और इसलिए इहाँसे पैन्युफैक्चर्स वारा दिप गप दिनों की गणना ठीक नहीं है। फिर भी इस संबंध में यह महसूस किया जाता है कि वस्तु स्थिति के अनुसार ट्रेसिल ने 1996-97 वर्ष के बीच बिजली और श्रम समस्या का सामना किया। 2000 मी.टन की स्थापित क्षमता के बावजूद ट्रेसिल ने 1996-97 में केवल 474 मी.टन का उत्पादन किया है। यह तर्क किया गया है कि यह ट्रेसिल के उत्पादन की इस कमी के कारण कुल घेरलू उत्पादन में 1996-97 में कमी आयी है। घेरलू उद्योग में धार घेरलू उत्पादक यथा सेंका, ट्रेसिल, पैन्यु और जोसवाल है। जबकि तीन घेरलू उत्पादकों ने ।।ट्रेसिल को छोड़कर ।। उत्पादन में बूढ़ी वशायी, केवल ट्रेसिल ने उत्पादन में कमी वशायी और इसलिए 1995-96 के स्तर से कुल घेरलू उत्पादन नीचे आ गया। घेरलू उद्योग की परिभाषा के अनुसार सभी घेरलू उत्पादकों का समूह या जो घेरलू उत्पादन के मुख्य अंश का उत्पादन करते हैं, वह घेरलू उद्योग है। 5600 मी.टन की कुल क्षमता में से ट्रेसिल की क्षमता 2000 मी.टन की है और उन्होंने 1996-97 में 3274.62 मी.टन के कुल उत्पादन में से 474 मी.टन का उत्पादन किया है। इन दोनों कारणों के आधार पर ट्रेसिल जिसे उत्पादन में हानि उठानी पड़ी, को घेरलू उद्योग नहीं माना जा

सकता और इसलिए मात्र टेसिल को हुई उत्पादन की हानि के कारण यह नहीं माना जा सकता कि पूरे घेरलू उद्योग को क्षति हुई है ।

24. इस मुद्दे का पहले विश्लेषण करना यहां आवश्यक है क्योंकि यह निष्कर्ष का मुख्य बिन्दु है कि घेरलू उद्योग को हुई क्षति वर्धित आयात के कारण है या यह किन्हीं अन्य कारणों पर आधारित है वर्तमान मामले में घेरलू उद्योग में चार उत्पादक शामिल हैं माना कि घेरलू उद्योग की परिभाषा के अनुसार चारों उत्पादक साथ-2 या ये जो कि घेरलू उत्पादन के मुख्य अंश का उत्पाद करते हैं को घेरलू उद्योग माना जाता है । आवेदन सभी चारों घेरलू उत्पादकों की ओर से प्रस्तुत किया गया है जो कि पूरे घेरलू उत्पादन के लिए उत्तरदायी हैं और उक्त पैराग्राफ 21 परं 22 में गम्भीर क्षति के विश्लेषण के लिए सभी चारों घेरलू उत्पादकों के लिए आंकड़े दिए गए हैं ।

25. पब्ली के उपभोक्ताओं/आयातकों की वलील का र्म यह है कि चार घेरलू उत्पादकों में से तीन, जो कि घेरलू उत्पादन के मुख्य अंश के लिए जिम्मेदार हैं, ने 1996-97 में उत्पादन उच्च सीमा तक प्राप्त किया । मुख्य रूप में चौथे उत्पादक की अक्षमता और वह भी बिजली और श्रम समस्या के कारण समग्र उत्पादन में आयी कमी की पूरे घेरलू उत्पादन में कमी नहीं माना जा सकता और परिणामस्वरूप इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता कि पूरे घेरलू उद्योग को गम्भीर क्षति हुई । निष्कर्ष पर भी नहीं पहुंचा जा सकता ।

26. मुझे डर है कि यह तर्क पूर्णस्वरूप से भामक है । पहली बात यह कि वर्धित आयात या घेरलू उत्पादकों को हुई गम्भीर क्षति का निर्धारण करने के लिए घेरलू उत्पादन गिरना चाहिए यह विषय की आवश्यकता नहीं है । वर्धित आयात के निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए आयात को मूल रूप में तथा घेरलू उत्पादन के साथ तुलनात्मक रूप में देखना होगा । यदि घेरलू उत्पादन बढ़ रहा था तो क्षेत्रीय आयात भी उससे तेजी से बढ़ रहा था तो घेरलू उत्पादन की तुलना में तथा रिश्तर रूप में दोनों तरफ से वर्धित आयात के लिए निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है । ऐसी स्थिति में घेरलू उत्पादकों को रक्षोपाय सुरक्षा उपलब्ध होगी । बशर्ते कि वे यह प्रवर्धित कर सकें कि वर्धित आयात के कारण ही घेरलू उत्पादकों को गम्भीर क्षति हुई है या होने की आशंका है । दूसरे शब्दों में गम्भीर क्षति के निष्कर्ष के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उत्पादन में कमी हो । दूसरे यह वास्तविक है कि यदि चारों घेरलू उत्पादकों में से एक उत्पादक उत्पादन व अपना बाजार का अंश बेने में असमर्थ है तो उसके बारा छोड़े गए अंश को दूसरे घेरलू उत्पादकों द्वारा लिया जाना स्वाभाविक है और ऐसा करने के लिए उन्हें अपना उत्पादन बढ़ाना होगा जिससे वे अपने साथी की बिक्री व उत्पादन की कमी के कारण पैदा हुई बढ़ी हुई घेरलू मांग की पूर्ति कर सकें ।

27. यह ध्यान में रखना है कि घेरलू उत्पादक आपस में एक दूसरे के प्रतिस्पर्धी हैं और मार्केट शेयर को हासिल के किसी भी मौके का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहेंगे । इस विचार के परिप्रेक्ष्य में अन्य तीन घेरलू उत्पादकों का घेरलू उत्पादन, वस्तुस्थिति और आंकड़े देखने पड़ेंगे । टेसिल के अलावा तीनों घेरलू उत्पादक संयुक्त रूप से 3600 मी.टन की उत्पादन क्षमता के लिए उत्तरदायी है उन्होंने वर्ष 1996-97 में 3274.62 मी.टन के कुल उत्पादन में लगभग 2800 मी.टन का घेरलू उत्पादन

किया है जिसमें से 474 मी.टन ट्रैसल का उत्पादन था। इस प्रकार तीनों घेरलू उत्पादकों ने उनके पास उपलब्ध 3600 मी.टन की क्षमता की तुलना में 2800 मी.टन का उत्पादन किया। जो कि क्षमता उपयोगिता के 77.78 के बराबर है। प्रत्येक की क्षमता को गिना जाए तो पता चलता है कि पन्थम के पास 1800 मी.टन की स्थापित क्षमता है और 1949 मी.टन का उत्पादन किया। सेंका की स्थापित क्षमता 900 मी.टन की है और उन्होंने 1996-97 में 630 मी.टन का उत्पादन किया। इस प्रकार उनके पास घेरलू मांग को पूरा करने के लिए और उत्पादन करने की गुणालूप्ति थी। मैं शीघ्र यह कहना चाहूँगा कि कैरिशयम कार्बाइड की उपलब्धता कोई मुद्रा नहीं था क्योंकि यह मुक्त रूप से आयात योग्य था और बहिक कम कीमत पर जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि पी आर चाइना और रोमानिया से कैरिशयम कार्बाइड के आयात के विस्तर नायित प्राधिकारी के समक्ष पंदीत हमिंग याचिक प्रस्तुत की गई है। ओसवाल के मामले में उन्होंने 1996-97 में 220 मी.टन का उत्पादन किया तथापि इस्तेव्य है कि उनके पास 900 मी.टन की स्थापित क्षमता है परन्तु उन्होंने 220 मी.टन से अधिक का एसीटिलीन ब्लैक का उत्पादन नहीं किया। यह भी देखा गया है कि वर्ष 1996-97 के नवम्बर 1996 तक ट्रैसल को बिजली और श्रम समस्या थी और नवम्बर 1996 में उन्होंने इर्हाई सेल विनियोगिताओं को सुधार किया कि उन्होंने अपना कार्य अपनी पूरी क्षमता पर शुरू कर दिया है और वे एसीटिलीन ब्लैक आफर करने की स्थिति में थे। अप्रैल 96 से अक्टूबर 96 तक घेरलू उत्पादकों के पास संयुक्त रूप में एक महीने में ओसतन लगभग 20.99 मी.टन का भंडार होता था जो कि नवम्बर मार्च 1997 अवधि में 159.88 एम ट्री की ओसत तक बढ़ गया। नवम्बर 96 में ट्रैसल के पास 4.88 मी.टन का ओपनिंग स्टॉक था और उस महीने में उन्होंने 27.33 मी.टन का उत्पादन किया। तथापि इस मात्रा में से वे केवल 9.7 मी.टन की बिक्री ही कर सके। जिसमें से 7.5 मी.टन जीप को आपूर्ति किया गया था। विसम्बर 96 के शुरू में ट्रैसल का भंडार 22.91 मी.टन तक बढ़ गया था। इसी महीने में उन्होंने 59.88 मी.टन का उत्पादन किया परन्तु केवल 25 मी.टन का उनका माल लखनपाल ने उठाया भगवर किसी अन्य इर्हाई सेल विनियोगिता ने ट्रैसल से माल नहीं लिया। इसी प्रकार जनवरी 1997 के शुरू में भंडारण 57.8 मी.टन फरवरी 97 में 61.4 और मार्च 97 के शुरू में 92.4 मी.टन तक बढ़ा। मार्च 1997 के आखिर में अंतरेष्ट 89.46 मी.टन था स्पष्ट है कि इर्हाई सेल बैटरी नियोगिताओं द्वारा ट्रैसल के पास उपलब्ध घेरलू एसीटिलीन ब्लैक नहीं उठाया जा रहा था। यह भी देखा गया कि घेरलू उत्पादकों का अन्तःशेष वर्ष 1995-96 के अन्त में 50.71 मी.टन की तुलना में 1996-97 के आखिर में 308.12 मी.टन हो गया है। इस प्रकार यह कहना ठीक नहीं होगा कि घेरलू उत्पादकों ने घेरलू मांग को पूरा नहीं किया या वे घेरलू मांग को पूरा करने की स्थिति में नहीं थे।

28. इस स्तर पर घेरलू मांग और सप्लाई की स्थिति का विश्लेषण भी आवश्यक है। यह देखा गया है कि वर्ष 1996-97 में मैं जीप ने 193 मी.टन का एक आर्डर पन्थम को दिया और 175 मी.टन का माल उनसे उठाया। उन्होंने 50 मी.टन का एक आर्डर ट्रैसल को दिया और 25 मी.टन ही प्राप्त किया। सेंका से उन्होंने 37.5 मी.टन प्राप्त किया। मैं छाड़ोनेशनल लिं. ने पन्थम से 300 मी.टन के आर्डर के विस्तर 282 मी.टन प्राप्त किया और सेंका से 480 मी.टन के विस्तर 515 मी.टन उठाया। लखनपाल लिं. ने अपना आर्डर पूरा करने के लिए पन्थम से 127 मी.टन और ट्रैसल से 281 मी.टन के विस्तर 220 मी.टन का माल प्राप्त किया। परेरुडी झोड़या लिं. ने पन्थम से 1203 मी.टन के विस्तर गए आर्डर के विस्तर 1165 मी.टन प्राप्त किया और ट्रैसल को दिए

गप 180 मी.टन के आर्डर के विस्तर 127.5 मी.टन माल उठाया और अपने आर्डर पूरा करने के लिए सेंका से 15 मी.टन लिया। पूर्णरूप में, एसीटिन ब्लैक के 2869.5 मी.टन के आर्डर के विस्तर 2689 मी.टन का माल उठाया गया जिसके कारण घेरलू उत्पादकों से 207.5 मी.टन कम माल उठाया गया। तथ्यों से पता चलता है कि इर्ह सेल बैटरी निर्माता घेरलू उत्पादकों को आर्डर देने के पश्चात् कुल सरीद की मांग को कम कर देते थे और वे घेरलू उत्पादकों से अपने माल के मूल्य आयातित एसीटिलीन ब्लैक के समान घेरलू उत्पादकों के पास 1995-96 में 50.17 मी.टन की तुलना में 308.12 मी.टन कम भंडार हो गया। यदि घेरलू उत्पादकों के पास पश्ची की उपलब्धता के अलावा और कोई कारण नहीं होते तो 207.5 मी.टन की इस मात्रा को घेरलू उत्पादकों ने सप्लाई कर दिया होता। इसी कारण से घेरलू उत्पादक आयातित मूल्यों के बराबर अपने मूल्य कम करने की मांग को पूरा करने में असफल रहे।

29. इर्ह सेल विनिर्माताओं ने 1996-97 में पश्ची का 1169.42 मी.टन का आयात किया। उन्होंने प्रस्तुत किया है कि 1995-96 में 3645 मी.टन से 1996-97 में 3858 मी.टन अर्थात् 213 मी.टन की सप्तत में बढ़तरी हुई और टेसिल के उत्पादन में 558 मी.टन की कमी हुई, बढ़ी हुई सप्तत व उत्पादन की कमी को जोड़ दिया जाए तो 771 मी.टन आता है और यही कारण है कि वर्ष 1996-97 में लगभग 770 मी.टन पश्ची के आयात में बढ़ती हुई। यह तर्क मुख्य रूप में आयात के पक्ष में है क्योंकि इससे उपभोग में बढ़तरी और टेसिल के उत्पादन में कमी की पूर्ति का प्रबन्ध आयात में बढ़तरी के बारा हुआ है और इसलिए बिल्कुल उधित नहीं है जैसा कि ऊपर व्यक्त किया गया है 1996-97 में वास्तविक आयात 1169.42 मी.टन था जो कि 1995-96 की तुलना में 1098.42 मी.टन अधिक था। मोटे तौर पर घेरलू सप्तत $\frac{1}{3}$ घेरलू बिक्की + आयात $\frac{2}{3}$ 1995-96 में 3645 मी.टन की तुलना में 1996-97 में लगभग 14.84% यानि कि 4186 मी.टन तक बढ़ा तथा 1997-98 के प्रथम 6 महीनों में 8.46% अर्थात् 1916 मी.टन तक गिर गया। जो कि 1996-97 के 4186 मी.टन की तुलना में अनुपातिक आधार पर कम है। मोटे तौर पर सप्तत में आयातित पसीटिलीन ब्लैक का शेयर 1994-95 में 0.24% से 1995-96 में 1.95% से 1996-97 में 28.2% से और 1997-98 के प्रथम छ: मास में 32.62% बढ़ा और समानान्तर अवधि के बीच घेरलू उत्पाद का अपना शेयर क्रमशः 99.76%, 98.05% से 71.81% और 67.38% तक कम हुआ। घेरलू उत्पादकों ने 1995-96 में 3645 मी.टन की कुल स्पष्ट सप्तत में से 3574 मी.टन की बिक्की की है यह स्पष्ट सप्तत 1996-97 में 4186 मी.टन तक बढ़ी लेकिन घेरलू बिक्की 3017 मी.टन तक गिर गई। घेरलू बिक्की में टेसिल का शेयर 389.66 मी.टन था। अन्य तीनों घेरलू उत्पादकों ने 1995-96 में उनके शेयर 2531 मी.टन के विस्तर 2627.47 मी.टन की बिक्की की है जो कि बढ़तरी के स्पष्ट सप्तत को शामिल करते हुए 2906.75 मी.टन तक बढ़नी चाहिए थी, भले ही टेसिल बारा सोई हुई बिक्की अन्य तीन उत्पादकों बारा प्राप्त नहीं की होती। घेरलू उत्पादन जो कि 1995-96 में 6% बढ़ा था, 1996-97 में लगभग 8.28% और 1997-98 के प्रथम छ: मास में लगभग 22.3% तक घट गया था। घेरलू उत्पादकों को 1995-96 की तुलना में 1996-97 में लगभग 295 मी.टन के उत्पादन की कमी हुई। यदि स्पष्ट सप्तत में बढ़तरी लगभग 14.84% को शामिल किया जाए तो घेरलू उत्पादकों को अपने उत्पादन में लगभग 825 मी.टन का घाट हुआ। जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है, 1996-97 में वास्तविक आयात लगभग 1169.42 मी.टन

था। कम सप्लाई फ्रेप गप 207.5 मी.टन की मात्रा के लिए समायोजन करने के पश्चात् 1995-96 में आयातित 71 मी.टन एवं 14.84% की वृद्धि 1996-97 में अधिक आयात गिनकर 880 मी.टन होता है। अधिक आयात घेरलू उत्पादकों द्वारा हुई लगभग 825 मी.टन की उत्पादन हालिं के साथ अच्छी तरह तुलनीय है।

30. 1996-97 में प्रारम्भ हुई घेरलू उत्पादकों को गम्भीर क्षति वर्ष 1997-98 के प्रथम छः मास में अधिक स्पष्ट रूप से स्वयं अभिव्यक्त हुई। इस अवधि में घेरलू उत्पादन में अनुपातिक आधार पर 1996-97 की तुलना में 1272 अर्थात् लगभग 22.3%, 1995-96 की तुलना में 28.86% की कमी हुई। घेरलू उत्पादन की बिक्री में अनुपातिक आधार पर 1996-97 की तुलना में 1997-98 के प्रथम छः मास में 1291 अर्थात् 14.42% और 1995-96 वर्ष के प्रथमार्ध की तुलना में 27.76% की कमी हुई। घेरलू उत्पादक घटी हुई कीमतों पर ही घटी हुई बिक्री अर्जित करने में समर्थ हुए। सेंका ने सितम्बर 1997 में एवी के मूल्य ₹.1,22.00 प्र.मी.टन से घटा कर ₹. 95,000

प्र.मी.टन कर दिया। फैन्यम ने ₹. 1,04,500 प्र.मी.टन से घटा कर ₹. 95,000 प्र.मी.टन कर दिया तथा इसी अवधि में ट्रीसल ने ₹. 1,05,000 प्र.मी.टन से घटा कर ₹. 94,000 प्र.मी.टन कर दिया। ट्रीसल को 1997-98 के दौरान कुछ समय के लिए बिजली समस्या का सामना करना पड़ा और उनका संयत्र 14 अप्रैल से 23 अप्रैल 1997 और 6 मई, 97 से 10 अगस्त, 97 तक बंद रहा। फिर भी उन्होंने इस अवधि में 121.52मी.टन पर्सीट्सीन ब्लैक का उत्पादन किया तथा अन्य तीनों घेरलू उत्पादकों ने इस अवधि के दौरान 1150.48 मी.टन का उत्पादन किया। इन तीनों घेरलू उत्पादकों के उत्पादन में जो कि 1996-97 में 2800 मी.टन था, अनुपातिक आधार पर लगभग 17.82% की गिरावट आयी। 1997-98 के प्रथम छः मास में आयात की गणना घेरलू उत्पादन का 49.16% किया गया। यह इसीलिए नहीं हुआ क्योंकि घेरलू उत्पादक घेरलू मांग को पूरा नहीं कर सके जबकि उनके पास वर्ष के शुरू में 308.12 मी.टन और 1997-98 के प्रथम छः मास के अंत में 226 मी.टन का मात्र भण्डार था और उनके पास घेरलू मांग को पूरा करने के लिए क्षमता सरप्लस थी जिससे ट्रीसल शामिल है जिनके पास घटे हुए उत्पादन के बावजूद पूर्ति करने के लिए आर्डर नहीं थे। 1997 में सेंका की एवी की गुणवत्ता के बारे में उल्लेख किया गया है। यह महसूस किया जाता है कि सेंका ने आई पस बिशिष्टी संख्या 12170/1987 के अनुसार एवी का निर्माण किया और अपने मुख्य ग्राहक मै.इंडो नेशनल लिमिटेड से भेरिट अवार्ड भी प्राप्त किया जो कि इंडो जापान संयुक्त उपकरण है, और उसी को अपना लगभग सारा उत्पादन बेचा था जबकि जीप की इलाहाबाद यूनिट ने सेंका द्वारा सम्परित एवी की गुणवत्ता पर कोई शिकायत नहीं की उनकी मैसूर यूनिट ने जो कि इसी प्रकार की वस्तुओं का विनिर्माण करती है, सेंका द्वारा सम्परित पेटी की गुणवत्ता को स्थीकार नहीं किया। इस संबंध में सेंका द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण तर्कसंगत लगता है क्योंकि ऐसा सम्भव नहीं है कि जीप की पक जैसी वस्तुएं बनाने वाली दो यूनिटों के इनपुट स्थीकार करने के मानवण्ड विभिन्न होंगे। ज्यादा संभावनाएं इस बात की हो सकती है कि सेंका की एवी की गुणवत्ता का बहाना बनाया गया हो ताकि वे विवेश के सस्ते साधनों से अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें। इर्दे सेल बैटरी विनिर्माता एवी के घेरलू उत्पादकों पर अपनी कीमते आयातित मूल्यों के समानान्तर घटाने के लिए दृष्टाव डाल रहे हैं और उन्होंने घेरलू उत्पादकों को धमकी भी दी कि यदि उन्होंने अपनी बिक्री

कीमते कम नहीं की तो वे उनसे कुल खरीद कम कर देंगे। मूल्य किसी वस्तु का प्राप्त करने के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आकलन है, घेरलू उत्पादकों पर इसका प्रभाव स्थाभाविक है। आयातित एसीटिलीन ब्लैक का सी आई एफ औसतन मूल्य जुलाई 1996 में यू पस डालर 2650 से अगस्त 1996 में यूपस डालर 2500 तक घट गया और जनवरी 1997 तक इसी स्तर पर रहा तथा उनके पश्चात् क्रमशः फरवरी, अप्रैल और जुलाई 1997 के दौरान 2125 डालर, 2000 डालर और 1900 डालर तक की तीव्र गिरावट आयी। आयातित एसीटिलीन ब्लैक की कीमतों में गिरावट एक स्थिकारीय तथ्य है जिन्हें नियातिकों ने आयातित एसीटिलीन ब्लैक की कीमतों में कमी का कारण माल भाड़े में कमी होना बताया है।

31. यह भी तर्क दिया गया है कि आयातित एबी के मूल्यों की ओसवाल के बिक्री मूल्यों के साथ अनुकूल तुलना की जा सकती है। और यह मूल्य ओसवाल के अलावा अन्य देशी विनिर्माताओं के मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं डालते। ओसवाल द्वारा पैट्रोकेमिकल्स तरीके से उत्पादित एबी अन्य तीन घेरलू उत्पादकों द्वारा कैलिसयम कार्बाइड तरीके से उत्पादित एबी से सस्ता है। यह मूल्य अन्तर घेरलू उत्पादकों के बीच वह अन्तर है जो निश्चित रूप से अन्य तीन यूनिटें के लिए तथाकथित मूल्य दमन होगा। इस संबंध में यह महसूस किया जाता है कि ओसवाल ने 200-225 मी.टन पबी का उत्पादन किया जो कि घेरलू खपत का लगभग 5/ है। कम कीमत होने के बावजूद घेरलू बाजार में उनका शेयर उसी स्तर पर रहा। इसके विपरीत आयातित एबी का शेयर उक्त वर्षित रूप में कम मूल्य पर कई गुना बढ़ा है। इसलिए यह सच है कि यह एबी की सी आई एफ आयात मूल्य ही है जिसके कारण मूल्य दमन हुआ और सप्लाई के स्रोतों को प्रभावित किया।

32. एक विचार उठाया गया है कि रक्षोपाय जांच में विचार के लिए मूल्य कोई संगत तथ्य नहीं है। इस संबंध में यह महसूस किया जाता है कि एटी डिपिंग जांच के मामले से भिन्न जहाँ नियातिकों द्वारा अपनाई गई मूल्य विभेदकारी कार्यप्रणाली एंटी डिपिंग कार्रवाई के लिए मूल कारक है, वही रक्षोपाय जांच के मामले में रक्षोपायस कार्रवाई बनाप रखने के लिए वर्धित आयात एक मूलभूत आवश्यकता है। किस मूल्य पर आयात किया जा रहा है, संगत तथ्य नहीं है क्योंकि यह कोई गलत प्रतिस्पर्धा नहीं है जो कि रक्षोपाय जांच की विषय वस्तु है लेकिन यह वर्धित आयात के द्वारा घेरलू उत्पादकों में स्वतः प्रस्तुत प्रतिस्पर्धा है भले ही यह उचित मूल्यों पर है। मात्र इस संदर्भ में आयात मूल्य संगत नहीं है। तथापि जब गम्भीर क्षति या इसकी आशंका के निर्धारण की बात आती है घेरलू उत्पादकों की बिक्री के स्तर में पीरवर्तन लाभकारीता आदि की जांच करना विधि आवश्यक है। ये तथ्य निसंदेह प्रतिस्पर्धी उत्पादों के मूल्यों पर निर्भर करते हैं और उस संदर्भ में आयात मूल्य बिल्कुल संगत है तथा घेरलू विधियों पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन के लिए विशेष रूप से उनकी जांच की आवश्यकता है।

33. निष्कर्षित: यह महसूस किया जाता है कि जांच की अवधि के दौरान आयात चमत्कारिक रूप में बढ़ा है, प्रतिशत के अनुसार 1994-95 की तुलना में 1995-96 में 885.42/ तथा 1995-96 से 1996-97 में से 1646.5/ तथा 1996-97 की तुलना में 1997-98 के प्रथम छ: मास में 106.95/ तक अनुपातिक आधार पर बढ़ा है। इन वर्धित आयातों के स्पष्ट खपत में प्रगामी रूप से महत्वपूर्ण शेयर प्राप्त किया है जो कि 1994-95 में 0.24/ से 1995-96 में 1.95/, 1996-97 में 28.2/ और 1997-98 के प्रथम छ: मास में 32.62/ तक बढ़े हैं। घेरलू उद्योग को गम्भीर क्षति इन वर्धित आयातों का परिणाम है जहाँ तक वर्तमान जांच का प्रश्न है वर्धित आयात के अलावा कोई अन्य कारण उद्योगों की अवस्था पर विशिष्ट रूप से प्रभावकारी दिखाई प्रतीत नहीं होते।

अन्य मुद्रे

34. घेरलू उत्पादकों की अक्षमता :-

एक मुद्रा यह भी उठाया गया है कि पसीटिलीन ब्लैक के घेरलू उत्पादक वक्ता के अनुसार कार्य नहीं कर रहे हैं और उनकी एवी के प्रति मी.टन के उत्पादन में पावर की स्थिति भी अंतर्राष्ट्रीय मानकों की तुलना में बहुत अधिक है। इस संबंध में यह महसूस किया जाता है कि रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण का प्रयोजन घेरलू उत्पादकों को प्रतिस्पर्धात्मक बनाना है। वास्तव में घेरलू उद्योग का स्वयं प्रतिस्पर्धात्मक नहीं होना अपने आप में यह वक्ता है कि घेरलू उद्योग कुछ अक्षमताओं से गुजर रहे हैं जिन्हें कि पुर्णसंरचना द्वारा हटाए जाने की आवश्यकता है। यदि घेरलू उद्योग पूर्णरूप में दक्ष होते तो शायद ये प्रतिस्पर्धी होते और इसलिए रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण की आवश्यकता न होती। यह महसूस किया जाता है कि अपनी अक्षमता के लिए घेरलू उद्योगों ने कारणों की पहचान की है और रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण के लिए प्रार्थना की है जिससे कि सुधार के लिए ये आवश्यक कदम उठा सके और इस अवधि में होने वाले वर्धित आयात के कारण होने वाली क्षति से उन्हें बचाया जा सके।

उपभोक्ता हित

35. यह दावा किया गया है कि एसीटिलीन ब्लैक पर रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण इर्दे सेल बैटरी को महगां बनापगा यह उपभोक्ता हितों के विरुद्ध होगा। इस संबंध में यह महसूस किया जाता है कि उपभोक्ता उद्योग और उपभोक्ताओं पर रक्षोपाय शुल्क के अधिरोपण से कोई सास प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है क्योंकि विशेष स्प से एवी के घेरलू उत्पादकों के आवश्यक बचाव तक रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण प्रस्तावित है आगे रक्षोपाय शुल्क का समय-2 पर उदारीकरण किया जाना है जिससे उपभोक्ता उद्योग पर इसका और प्रभाव कम होगा। रक्षोपाय शुल्क का उद्देश्य घेरलू उत्पादकों को स्वयं पुर्णसंरचना और सकारात्मक समायोजन करने सक्षम बनाना है जिससे कि ये वर्धित आयात के कारण होने वाली प्रतिस्पर्धा की नई स्थिति का सामना कर सकें। रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण सार्वजनिक हित में होगा जिससे उपभोक्ता उद्योग कैफलियक प्रतिस्पर्धी तरीकों से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। इसलिए यह सुविचारित मत है कि इस वर्तमान मामले में रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण उपभोक्ता हितों के विरुद्ध न होकर यह सामान्य सार्वजनिक हित में होता।

विभिन्न तरीकों से उत्पादित पसीटिलीन ब्लैक की मूल्य तुलनीयता

36. यह दावा किया गया है कि डाइडोकार्बन रुट से उत्पादित एसीटिलीन ब्लैक, कैर्बिन्यम कार्बाइड रुट से उत्पादित पसीटिलीन ब्लैक की तुलना में सस्ता है। यह प्रस्तुत किया गया है कि कैर्बिन्यम कार्बाइड रुट से एवी का निर्माण करने वाले अन्य तीनों घेरलू उत्पादकों के मूल्यों से ओसवाल की कीमतें

लगभग ₹.20,000/-प्रति मी.टन से कम है। और ₹पये 195,00 प्रति मी.टन की दर पर संस्तुत अनन्तिम रक्षोपाय शुल्क दोनों रुटें से निर्मित एसीटिलीन ब्लैक के मूल्य के अन्तर के लगभग बराबर है। यह प्रस्तुत किया गया है कि विभिन्न रुटें से उत्पादित एसीटिलीन ब्लैक के मूल्यों की तुलना नहीं की जानी चाहिए। इस संबंध में यह महसूस किया गया है कि यह एक तथ्य है कि औसत एवं का विनिर्माण पेट्रोकेमिकल्स रुट से कर रहे हैं और उनके मूल्य अन्य तीनों घेरे उत्पादकों से साधारणतया कम है तथापि अंतर्राष्ट्रीय बाजार के मामले में भी, जैसा कि भारत में एवं के आयात के द्वारा दर्शाया गया है, यह देखा गया है कि विभिन्न निर्यातकों द्वारा नियातित पेट्रोकेमिकल्स रुट या कैरिशयम कार्बाइड रुट से निर्मित एवं के मूल्य एक समान है। आवेदकों ने प्रस्तुत किया है डेंका इसिंगापुर में द्वारा पेट्रोकेमिकल्स रुट से बनाये गये एवं सितम्बर, 96 में यू.एस.डालर 2400 की दर से बेचा जा रहा था और अक्टूबर 1997 में यू.एस.डालर 1800 तक गिरावट आ गई थी। संगत रूप से इसी अवधि के दौरान साउथ अफ्रीका और फिलीपिन्स जिन्होंने कि एसीटिलीन ब्लैक का विनिर्माण कैरिशयम कार्बाइड रुट से किया था, ने भी अपने मूल्य लगभग 2400 यू.एस.डालर से लगभग 1800 यू.एस.डालर तक कम करके समायोजित किए। इसलिए यह देखा गया है कि अंतर्राष्ट्रीय मार्केट में कच्चे माल के प्रयोग पर निर्भर एसीटिलीन ब्लैक के मूल्य में कोई कमी नहीं है। भारतीय उत्पादकों के मामले में भी अलग से आयातित एवं के मूल्यों का विभिन्न तरीकों से उत्पादित एवं के साथ से तुलना करना उचित नहीं होगा। संबंधित उत्पाद पर लगाया जा रहा रक्षोपाय शुल्क और एक समान रुट से उत्पादित एवं एक जैसा होने के कारण यह उचित होगा कि एवं के विनिर्माण में अपनाए गए रुट के होते हुए भी उद्योग औसत आधार पर घेरे रूप में उत्पादित एवं के मूल्यों की तुलना आयातित एवं के मूल्य के साथ करनी चाहिए।

समायोजन योजना

37. घेरे उद्योगों ने अपने आवेदन में समायोजन योजना प्रस्तुत की है। यह प्रस्तुत किया गया था कि ट्रेसल जो कि कैरिशयम कार्बाइड रुट से एवं का विनिर्माण करते हैं, ने केरल में निर्माण इकाई के निकट उनका स्वयं ग्रहीत हाइड्रोपावर परियोजना लगाने का फैसला किया है उनका विचार है कि 7.5 मेगावाट और 15 मेगावाट की क्षमता के दो हाइड्रो पावर परियोजना लगायी जाए और ये परियोजनाएँ क्रियान्वित होने की प्रक्रिया में हैं। कैरिशयम कार्बाइड मुख्य कच्चा माल है और इसके विनिर्माण में अधिक पावर का प्रयोग होता है पावर की लागत में की गई बचत का एवं के उत्पादन की लागत पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा जिससे उत्पादन की औसत लागत कम होकर इसे मितव्ययी बनाएगी। ट्रेसल ने अपनी हाइड्रो पावर परियोजना को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत किया है। यह महसूस किया जाता है कि ट्रेसल ने अपने संयंत्रों की पुर्नसंरचना के लिए आवश्यक कार्रवाई प्रारम्भ कर दी है और वे एक सकारात्मक समायोजन की प्रक्रिया में हैं जो कि उनकी प्रतिस्पर्धा शक्ति को बढ़ाएगा।

38. सेंका के संबंध में, जो कि एसीटिलीन ब्लैक का निर्माण कैरिशयम कार्बाइड रुट से कर रहे हैं, उनके पास कैरिशयम कार्बाइड की अपनी इकाई नहीं है। इसलिए उन्हें अपना अधिकांश कच्चा माल बाहरी रुटों से सरीदाना होता है। इसीलिए सेंका ने प्रस्तुत किया है कि वे एसीटिलीन गैस को कैक करके एवं में परिवर्तन करने के लिए एसीटिलीन गैस प्राप्त करने हेतु पेट्रोकेमिकल उद्योग से चर्चा कर

रहे थे। पन्यम ने बताया है कि वे भी सेंका की तरह प्रस्तावित कार्य करने जा रहे थे। इस संबंध में यह तर्क दिया गया है कि घेरलू उत्पादकों में से दो ने वाणिज्य मंत्रालय में नामित प्राधिकारी के सामने कैरिशयम कार्बाइड के आयात से संबंधित पंटी डम्पिंग आवेदन फार्स्ट करने के लिए कार्य शुरू किया है। इस आवेदन में यह उल्लेख किया गया है कि "भारत में, चेम्बूर बम्बई स्थित यौनयन कार्बाइड पर्थीलिन संयंत्र, नैषा कैकर में कैक की हुई गैसों के विलायक सार तारा एसीटिलीन निकाल रहे थे। लेकिन अब भारत में पेट्रोकेमिकल्स उद्योग में एसीटिलीन के कोई ज्ञात निर्माता नहीं है।" एंटी डम्पिंग आवेदन में इस कथन के परिप्रेक्ष्य में यह तर्क दिया गया है कि सेंका और पन्यम का समायोजन प्लान वास्तविक नहीं है क्योंकि पेट्रोकेमिकल रूट से एसीटिलीन की प्राप्ति सीधे ग्राहक है। इस संबंध में यह महसूस किया जाता है कि पंटी डम्पिंग आवेदन, जिसमें एसीटिलीन ब्लैक के दो घेरलू निर्माता याचिकाकर्ताओं को पेट्रोकेमिकल उद्योग में एसीटिलीन के किसी ज्ञात निर्माता की जानकारी नहीं थी। यह ध्यान में रखना चाहिए कि कैरिशयम कार्बाइड के अपने उत्पादन के बचाने हेतु एंटी डम्पिंग शुल्क के लिए इच्छुक याचिकाकर्ताओं द्वारा यह घ्यान दिया गया है और इस संबंध में एसीटिलीन के निर्माण करने के लिए अकेले स्त्रोत के रूप में कैरिशयम कार्बाइड को बचाने की आवश्यकता पर जोर देने के लिए उन्होंने यह कथन दिया है। दूसरी ओर यह देखा गया है कि सेंका ने कैरिंग और एकी उत्पादन के लिए पेट्रोकेमिकल्स उद्योग से एसीटिलीन ग्राप्त करने हेतु अपने ग्राहकों के बारे में विशेष रूप से उल्लेख किया है वे 1996 से इस मामले के पीछे लगे हुए हैं जो अब केमिकल और फर्टीलाइजर मंत्रालय में पहुंच गया है। सेंका ने इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पोरेशन लि. बड़ी वाग को एसीटिलीन ब्लैक के निर्माण के लिए फीड स्टाक के रूप में एसीटिलीन गैस की सप्लाई के संबंध में 9.3.96 को लिखे गए पत्र की प्रति भी प्रस्तुत की है। यह भी महसूस किया जाता है कि कैरिशयम कार्बाइड की डम्पिंग से ही संबंधित एंटी डम्पिंग आवेदन में यह प्रस्तुत किया गया है कि नैषा/गैस/आयल कैकरों में पर्थीलिन के निर्माण की प्रक्रिया के दौरान एसीटिलीन की भी थोड़ी सी मात्रा उत्पन्न हो जाती है और निर्माता एसीटिलीन की मात्रा फीड स्टाक और कैरिंग के तापमान पर निर्भर होती है। इसीसे भैन्युफैक्चर्स द्वारा प्रस्तुत इस दस्तावेज से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि एथीलिन के निर्माण में एसीटिलीन उत्पन्न हो रही है और एसीटिलीन के उत्पादन की मात्रा, कैरिंग के तापमान और फीड स्टाक पर निर्भर हो सकती है इसीलिए एकी के घेरलू उत्पादकों द्वारा भारत में पेट्रोकेमिकल्स इकाइयों से एसीटिलीन ग्राप्त करने की संभावना एक अवास्तविक प्रस्ताव नहीं है क्योंकि बड़ी पेट्रोकेमिकल्स इकाइयों जो इथीलिन का निर्माण करती हैं, वे भारत में स्थित हैं मामला संबंधित मंत्रालय के समझ हैं और इसीलिए इसी सेल भैन्युफैक्चर्स द्वारा व्यक्त विचार मान्य नहीं है। यह भी महसूस किया जाता है कि समझ बनने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि घेरलू उद्योग अकेले पेट्रोकेमिकल्स रूट से एसीटिलीन का निर्माण करें। विशेष अप्रीक्ल और फिलीपिन्स में कुछ अंतर्राष्ट्रीय निर्माता एसीटिलीन ब्लैक का निर्माण कैरिशयम कार्बाइड और यह एसीटिलीन ब्लैक भारतीय बजारों में प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर प्रवेश कर रहा है जिससे स्पष्ट होता है कि कैरिशयम कार्बाइड रूट से एसीटिलीन का उत्पादन प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर संभव है।

39. उपरोक्त के परिप्रेक्ष्य में यह महसूस किया जाता है कि घेरलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समायोजन योजना परिकल्पना योग्य या सेवानीतिक नहीं है। प्रतिस्पर्धात्मक होने के लिए और आयात से उत्पन्न प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए वे सच्चा प्रयास कर रहे हैं। ऐसा माना जाता है कि रक्षोपाय शुल्क का अधिरोपण उन्हें पुनर्संचना में और प्रतिस्पर्धात्मक बनने में सहायता प्रदान करेगा। यह भी महसूस किया जाता है कि इस विश्व में कुछ घेरलू निर्माताओं ने पहले ही कारबाई शुरू कर दी है, और अपनी योजनाएं पूरी करने के लिए घेरलू उद्योगों को लगभग दो वर्ष की अवधिकी आवश्यकता होगी।

विभेन्न देशों के शेयर

40. इस संबंध में प्रारम्भिक निष्कर्ष के पैरा 5॥१॥ के निष्कर्ष की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष और डॉ. जी को संस्तुति

41. उपर्युक्त जांच परिणामों के परिप्रेक्ष्य में, यह निष्कर्ष निकलता है कि एवी के अवित्त आयात से एवी के घेरलू उत्पादकों को गम्भीर क्षति हुई है और दो वर्ष की अवधि के लिए रक्षोपाय शुल्क का अद्योपाय सार्वजनिक हित में होगा।

42. रक्षोपाय शुल्क के परिमाण पर पहुंचने के लिए जो कि घेरलू उपयोग को बढ़ाने के लिए पर्याप्त होगी, समस्त घेरलू उपयोग के लिए घेरलू रूप में उत्पादित एवी के उत्पादन की लागत ५ गोपनीय^१ को भारित औसत आधार पर लिया गया है। इसी तरह एवी के सीआईएफ आयात मूल्य को भी भारित औसत आधार पर लिया गया है। घेरलू उत्पादित एवी और आयातित एवी दोनों के लिए लागू शुल्क कर्त्ता और हैंडलिंग चार्ज के लिए समायोजन किए गए हैं तथापि बजट 1998-99 को ध्यान में रखते हुए किसी कर या अन्य स्थानीय कर जो कि घेरलू उत्पादित एवी पर लिए जाते हैं, के लिए समायोजन नहीं किया गया है। आयात ५ गोपनीय के लिए नहीं पर ५/ विशेष अतिरिक्त शुल्क के उद्यग्नि का प्राक्षयन जिसमें बिंक कर व य स्ट ना कर आ शामिल होते हैं, सामन्यतः घेरलू उत्पादित वस्तुओं पर उद्यग्नि की अवधि के दौरान ट्रैसल और पन्थम ने मुख्य कठ्ठे माल का उत्पादन किया यथा स्वयं ग्रहीत कैरिशयम कार्बाइड और अकेले सेंका ने अपनी कैरिशयम कार्बाइड की आवश्यकता का पक अंश आयात किया। औसतवाल ने भी एवी के उत्पादन में कैपटिवली उत्पादित परीसीट्सीन का प्रयोग किया है। इसलिए घेरलू उपयोग के लिए उत्पादन की भारित औसत लागत किसी भी विशेष रूप में प्रभावित होने की संधावना नहीं है और इसीलिए इस कारण से घेरलू तौर पर निर्भित एवी के उत्पादन की भारित औसत लागत में कोई समायोजन प्रस्तावित नहीं किया गया है। घेरलू उत्पादकों ने ५/ लाभांश का दावा किया है जो कि सर्कसंगत है।

प्रथम वर्ष रु. 12950 प्र.मी.ट

द्वितीय वर्ष रु. 8830 प्र.मी.ट

[सं. रक्षोपाय/जांच/1/1997]

आर० कें० गुप्ता, महानिदेशक (रक्षोपाय)

DIRECTOR GENERAL (SAFEGUARDS)**NOTIFICATION**

New Delhi, the 16th June, 1998

Subject.—Safeguard investigation concerning imports of Acetylene Black into India—Final Findings.

G.S.R. 377 (E).—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 and the Customs Tariff Identification and Assessment of Safeguard Duty Rules, 1997 thereof.

(A) PROCEDURE

1. The Director General (Safeguards), hereinafter referred to as DG, notified Preliminary Findings in the Safeguard investigation concerning imports of Acetylene Black (hereinafter referred to as AB) vide Notification No. SG/INV/1/97 dated 27th January 1998, published in the official gazette on 4th February 1998.

2. A copy of the said Notification was sent to all known interested parties to make their views known on these Preliminary Findings by 9.3.98. A copy of the Notice was also sent to the governments of the exporting countries through their embassies in New Delhi.

3. Request for extension of time to submit their responses was made by the following parties :-

- i) M/s. Panyam Cements and Mineral Industries Ltd.
- ii) M/s. Senka Carbon Pvt Ltd.
- iii) M/s. Tecil & Hydro Power Ltd.
- iv) Economic and Commercial Counsellor, Embassy of Peoples Republic of China.

Their request was considered and an extension of time upto 24.3.98 was allowed.

4. Replies to the notice dated 27.1.98 were received from the following parties:-

- a) All the domestic producers through their advocates .
- b) All the importers through their advocates.

- c) Exporters/Governments of exporting countries :-
- i) High Commissioner , Republic of Singapore.
- ii) Embassy of the Peoples Republic of China.
- iii) MCCI Corporation Philippines.
- iv) South African High Commission as convenor for six countries involved namely Belgium, Peoples Republic of China, Japan, The Philippines, Singapore and South Africa.
- v) M/s. Denki Kagaku Kogyo Kabushiki Kaisha (DENKA).
- vi) M/s. Denka Singapore Private Ltd. (DSPL).
- vii) Embassy of France.
- viii) Embassy of Japan.

5. Verification of information deemed necessary for the investigation was conducted by a team of officers and to this end investigations were carried out by a team of officers at the premises of the domestic producers and some of the importers/battery manufacturers in March, 1998. Outcome of the verification was communicated to the concerned parties.

6. A Public Hearing was scheduled for 12.5.1998, which was postponed and held on 26.5.1998. Following parties attended the Public Hearing :-

- i) All the domestic producers through their advocate.
- ii) All the importers through their advocate.
- iii) M/s. Denki Kagaku Kogyo Kabushiki Kaisla (DENKA) through advocate.
- iv) M/s. Denka Singapore Pvt. Ltd. (DSPL) through advocate.
- v) M/s. Karbochem, South Africa through their local agent.
- vi) South African High Commission.
- vii) Embassy of Japan.
- viii) Republic of Singapore.

Evidence presented orally at the time of the Public Hearing was asked to be submitted in writing so as to reach the office of DG on 3 June, 1998. Parties were asked to collect copies of written submissions of other parties from the office of DG on 4 June, 1998 and to submit rebuttals if any by 10 June, 1998.

(B) VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

7. The domestic producers have made the following main points :-

- i) Existence of Dry Cell Battery Manufacturers' Association (ADCBM) is not known to them and they were not aware whether it was a recognised body to make a representation. ADCBM neither figured in the application filed by the domestic producers of Acetylene Black nor did it enroll itself as an interested party. Despite this situation, DG has given cognizance to the issues raised by ADCBM.

- ii) The injury analysis for 1996-97 and 1997-98 dealt by ADCBM are not accurate reflection of the situation prevalent in the AB industry. The drop in production level and sales particularly in 1997-98 is only due to indiscriminate import of AB, unethical price under-cutting by the exporting countries and the insistence of the indigenous dry cell battery manufacturers in creating a price war between imports and indigenous sources, revised schedules and reduced quantum of offtake under the threat of continued imports if the domestic industry did not reduce their prices to uneconomical levels of operation.
- iii) There was no question of supply restraint from the indigenous sources despite power situation in Kerala and depressed performance of the industry in 1996-97. The domestic industry was more grievously affected in 1997-98 due to heavy importation of AB at unrealistic prices undercutting the local market by the overseas suppliers.
- iv) The effect of heavy importation of AB which began in 1996-97 and continued unabated has affected the performance of AB manufacturers particularly in 1997-98 (second half) when the plants were being operated intermittently with reduced production below the economic level of operation. Reduced production and sale of AB at the slashed down prices of procurement offered by Indian Dry Cell Battery Manufacturers (IDCBM) is gravely affecting the industry's financial results.
- v) During the quarter Oct.-Dec., 1997 production of AB in Panyam was only 296 MT as against 937 MT during the period Apr.-Sept., 1997. By Sept., 1997 Panyam had a huge unsold stock due to lack of confirmed orders/dispatch instructions.
- vi) Despite power problems in Karnataka and Kerala, Panyam whose installed capacity was 1800 TPA and was expected to produce at 80% efficiency, in fact produced as much as 1949 MT in 1996-97 but could sell only 1786 MT due to reduced level of offtake.
- vii) Shut down of the Panyam plant for one month during Sept., 1996 was for annual maintenance, a common feature in any manufacturing plant.
- viii) Senka's sale of AB was only 404 MT, 407 MT and 630 MT (including job work) for the years 1994-95, 1995-96 and 1996-97 respectively against their installed capacity of 600 TPA, 600 TPA and 900 TPA respectively. In the year 1996-97, Senka was able to increase its capacity utilisation only because M/s. Indo-National Ltd. (INL) thought it prudent to buy more AB from Senka rather than import and even arranged for the supply of Calcium Carbide for Senka so that they could produce AB on a conversion basis. M/s. Eveready Industries and M/s. Lakhapal could have also utilised the capacity still available with Senka particularly when Tecil was in distress due to reasons beyond their control. In 1997-98, M/s. INL also discontinued job work from Senka and switched over to importation.

ix) M/s Geep have repeatedly failed to lift the material ordered by them as per the given schedule. They also insisted on extension of 30 days credit and Senka which had offered them the same had to make continued follow up to get the payment. These circumstances led them to infer that order was being placed on them as a buffer only to meet the vagaries in the supply/arrival of imported AB.

x) Tecil had to face power cuts and labour problem for only a short period of time in 1996. The power shortage and high percentage of power cuts to the Carbide industry was for a short period in 1996-97 and the situation became normal in Nov., 1996.

xi) The contention that the Indian Acetylene Black Manufacturers (IABM) were unable to satisfy the requirements of IDCBM resulting in the import of AB is not true as neither Senka nor Panyam were approached by IDCBM with orders to supply and their was no case of rejection or refusal to supply against an order. It is true that the IABM with their AB manufactured from traditional route were not able to meet the price of AB from the overseas suppliers. Cutting down of the indigenous procurement by IDCBM has led to uneconomical levels of operation by the IABM.

xii) M/s. Geep had initially in 1990 rejected Senka's first supply of AB satisfying the Indian Standard Specification fully. They took long time to return the material which was found to be perfectly in order and was sold to other customers. They were told that the final finishing of Senka's material was based on low density being the requirement of their main customer M/s INL. Geep had two manufacturing plants, one at Allahabad and the other at Mysore. While Allahabad Plant did not raise any quality problems, towards the end of 1996 Mysore Plant complained about Senka's AB quality as not meeting with their specifications. Thus, it seemed that within the same company ,each plant manufactures identical products, albeit with different input acceptance level, which is unlikely. It is more likely that Geep was committed to imports and wanted some excuse for not purchasing from domestic industry. They reduced off-takes due to build up of stocks of imported AB.

iii) Tecil too had stabilised their quality of production as would be seen from a reference to the book titled 'Technology in India Acetylene Black Industry- a report prepared under the National Register Of Foreign Collaborations- Government of India- Department of Scientific and Industrial Research-August 1988' vide Page 22, Page 26- Para 3.5 and page 68- Para 6.6.

xiv) Cost of production of AB was brought down by Tecil from Rs. 1,27,576 in 1996-97 to Rs. 1,10,146 by reducing the consumption of power in the manufacture of calcium carbide.

xv) The manufacture of Calcium Carbide has been found to be cost effective by Panyam and Tecil despite marginally higher rate of power consumption. Senka are also purchasing Calcium Carbide from a renowned source in South India at a reasonable price.

- xvi) Tecil is in the process of putting up Hydro-power projects. Panyam and Senka are proposing to source Acetylene gas from the petrochemical complexes using natural gas for the manufacture of Ethylene in which Acetylene gas is released as a by-product. The argument that adjustment to competition is not feasible is unfounded.
- xvii) The weighted landed cost (after port clearance) of AB had always been higher during 1994-95, 1995-96, 1996-97 except for the year 1997-98 which has resulted due to slashing of prices by overseas suppliers. The price level has come down during this period from \$2400 per MT to \$1700 per MT.
- xviii) The contention of M/s. INL seeking price reduction to Rs 95000 per MT on the ground of increase in Zinc price is not tenable as Zinc prices have fallen drastically and its effect is expected to be felt during 1998-99.
- xix) Panyam has stopped production after Jan.1998.
- xx) Imports have increased by about 1100% in 1996-97 and the trend of imports of AB continues in 1997-98 as the imports in 1997-98 rose to 1640 MT. The imports during the first six months of 1997-98 (April-Sept.) were 625.38 MT.
- xxi) The sales of domestically produced AB has declined to 2001 MT in 1997-98 and the domestic producers have lost their profitability.
- xxii) The domestic industry is in the process of restructuring. Senka and Panyam are exploring the possibility of manufacturing AB through hydrocarbon route instead of Calcium Carbide route and Tecil is trying to captively generate Hydro electrical power which should reduce the cost of production.
- xxiii) The domestic producers have requested that the product exported from Belgium should not be excluded on the ground that it is described "Conductive Carbon" since commercially and technically it substituted AB.
- xxiv) The labour and power problems were over lapping in Tecil. Once they commenced normal production in 1996 they carried huge stocks as offers made by them in writing were not accepted by the Dry Cell Battery Manufacturers.
- xxv) The use of term dumping in the Safeguard application was in a generic sense and not in the technical sense of dumping.
- xxvi) The Report of Department of Scientific and Industrial Research on the AB Manufacture in India is a 1988 Report and cannot be entirely relied upon in today's context as many parameters since then have changed.
- xxvii) Tecil is a captive producer of Calcium Carbide and would therefore continue to manufacture AB from this route.
- xxviii) Calcium Carbide and AB are two different products both manufactured domestically and the issues connected with Calcium Carbide should not be mixed up with the issue concerning AB.
- xxix) The domestic producers of AB are not in a position to generate adequate resources to facilitate their restructuring unless Safeguard Duty is imposed on AB.

xxx) CIF pricing of exporters is same irrespective of the method of manufacturing i.e. through Petrochemical or Calcium Carbide route. No distinction on the basis of route, therefore, need to be made.

xxxi) Reduction in price of imported AB was the main reason for increased imports.

xxxii) The domestic industry has made plans to adjust their plants. Tecil is installing Ullunkal hydro-electric plant which is over 80% complete. Tecil has also entered into a collaboration with M/s. Kedab Engineering, Australia, for augmenting and modernising of the production facilities to enhance installed capacity to 3600 TPA. Senka and Panyam have collectively presented a plan to the Ministry of Chemicals & Fertilisers to source acetylene from their refineries. They have also submitted a plan on confidential basis.

(C) VIEWS OF THE USERS/IMPORTERS

8. The users/importers of AB have made the following main points :-

i) AB has not been imported into India in such 'Increased Quantity' in 1997-98 when compared with 1996-97 in absolute terms. The import in the first four months of 1997-98 was 250.57 MT and was less than the corresponding import in 1996-97 of 280 MT on proportionate basis.

ii) Since import as a percentage of domestic production has increased from 25.68% in 1996-97 to 29.54% in 1997-98, i.e. by only 4%, it cannot be considered as import of the article in such increased quantity. There has been no such increased import either in absolute terms or relative to domestic production, and the fundamental condition required for invoking Section 8B is not satisfied. Determination of the increased imports with reference to 1994-95 and 1995-96 has led to this erroneous conclusion.

iii) The injury analysis of production, capacity utilisation etc. have also been vitiated by the fact that these have been considered with reference to the years 1994-95 and 1995-96. As 1996-97 was the first year of imports of AB due to the problems faced by the domestic manufacturers of AB, the fall in production, sales, market share, etc. have to be studied only with reference to 1996-97 in 1997-98.

iv) Although the production of Acetylene Black by the domestic industry has fallen from 3570 MT in 1995-96 to 3275 MT in 1996-97, the production of Panyam increased from 1922 MT to 1949 MT from 1995-96 to 1996-97 even though Panyam had closed down for one month for maintenance purpose, Senka's production also went up from 440 MT to 630 MT in 1996-97 and the production of Oswal was higher at 221.65 MT in 1996-97 as against 206.25 MT in the previous year. Thus three of the four domestic producers of AB showed increase in production in 1996-97. It was only in the case of fourth producer namely Tecil that there was a fall in production from 1031.8 MT to 473.93 MT. The fall in

production in Tecil was due to serious power cuts and workers strike. Fall in production in Tecil was, therefore, not due to the alleged increased imports.

v) The fall in capacity utilisation is mainly attributable to the drop in apparent demand in the first half of 1997-98 by 14%, and increase in installed capacity by about 6% and problems of inefficiency power cuts and labour faced by Tecil and not due to increased imports. The increase in the market share of imports from 21.8% in 1996-97 to 22.81% in 1997-98 i.e. 1%, cannot be regarded as serious injury resulting in significant overall impairment of the domestic industry.

vi) Injury to domestic industry is a self inflicted injury as they increased the installed capacity from 5300 MT to 5600 MT inspite of a low capacity utilisation. The causal link between increased imports and serious injury to the domestic industry is absent.

vii) The quality certificate received from M/s. INL by Senka were much earlier to the current period of investigation in 1997-98. The quality problem brought to Senka's notice by M/s. Geep in 1997 has not at all been dealt by the DG in his Preliminary Findings. The domestic industry has not taken any action to switch over from the Calcium Carbide route to the Hydrocarbon Route for the manufacture of AB as recommended by the Department of Scientific and Industrial Research in its report. The domestic producers have themselves stated that Senka will not be cost effective through the Calcium Carbide route. The question is also whether it was feasible for Senka as well as Panyam to get Acetylene in an efficient manner from any Petrochemical Industry.

viii) Oswal , the only producer using the Petrochemical route is operating at not more than 25% of their installed capacity. Their cost of production of AB is about Rs. 20,000/- lower than the other domestic producers. The current landed price of imported AB at existing rates of Customs duty compares favorably with the selling price of Oswal. Imported AB, therefore, did not influence the price of the indigenous manufacturers other than Oswal.

ix) The domestic producers of AB are complaining about dumping of Calcium Carbide, non-availability and high cost of power and have a built in excess capacity which prevented them from achieving optimum capacity utilisation. Safeguard duty is not warranted if domestic industry cannot adjust itself to the competition.

x) The prices at which the import of the product is taking place should not at all enter into consideration in a safeguard action.

xi) The provisional safeguard duty recommended is about US \$ 500 per MT or about 28% of the import price of US \$ 1800. This is in addition to the existing Customs duty of 35% and thus takes the total levy to 63% nullifying the entire

process of economic restructuring. The fair selling price should be worked out on the basis of cost of production of the efficient unit.

xii) The product exported from Belgium is not AB. It is Conductive Carbon, classified under 28030003 of ITC which is not produced from acetylene route and, therefore, should be excluded from the purview of the present investigation.

xiii) The increased domestic consumption from 3645 MT in 1995-96 to 3858 MT in 1996-97 i.e. an increase of 213 MT and Tecil losing their production of 558 MT, together accounted for 771 MT which explains the increase in quantity imported in 1996-97 over 1995-96.

xiv) There are four domestic producers of AB out of which 3 domestic producers in 1996-97 registered an increase in production and only one domestic producer namely Tecil suffered loss of production, sales etc. for reasons other than increased imports i.e. labour and power problems etc. This domestic producer alone cannot constitute the domestic industry as per the definition of the domestic industry under the Safeguard Law and, therefore, no action need be taken for imposition of Safeguard Duty.

xv) Availability of Acetylene from Hydrocarbon route is doubtful. Two of the domestic producers in the context of anti-dumping petition concerning calcium carbide have mentioned that there are no known manufacturer of acetylene in Petrochemical industry in India. Adjustment plan submitted by some of the domestic producers is, therefore, questionable.

(D) VIEWS OF THE EXPORTERS/EXPORTING COUNTRIES

9. The exporters of AB/governments of exporting countries have made the following main points :-

a) Karbochem :-

i) AB producers in India have become uncompetitive as compared to overseas suppliers due to higher electricity price.

ii) Current rate of protection to the domestic producers against imports is sufficient since duties have been reduced from 85% in 1993-94 to the current level of 35% on CIF value and the domestic producers who had more than 97% of market share of AB upto 1996 still have 85% share during 1997.

iii) AB exports from Karbochem to India started in the later part of 1996 after the freight rate for a 40 feet container to Mumbai came down from US \$ 3600 in 1996 to the current rate of US \$ 1050. The Rand US \$ exchange rate also went up from R 3.63 per US \$ to R 5.10 - a depreciation of 40%.

iv) Since 1992 Karbochem has also improved cost of production which has allowed it to increase its domestic market share. Karbochem has not extended any preferential pricing to the Indian market.

v) The cost of local raw materials i.e. electricity, lime and reductance have pushed the Indian producers of AB to a corner where they cannot compete with World class producers.

vi) SG duty on AB will lead Indian Battery Producers to increase the selling price of batteries in the local market causing increased imports of low quality batteries from China.

vii) The price of AB was reduced by Denka who had increased the capacity of the Singapore Plant to 12,000 MT and also continued the production in the Japan Plant.

viii) The price of AB in 1996 was US \$ 1900 PMT @ 1US \$ = Rs. 32.25 and the present price is US \$ 1800 PMT @ 1US \$ = Rs. 41.75. The price has reduced as a result of drastic reduction in sea freight.

ix) AB is usually derived from Naphtha or Calcium Carbide and that the AB produced from Calcium Carbide is of better quality.

x) It is of utmost importance that the production cost of Calcium Carbide is very efficient so as to reduce the cost of production of AB.

b) MCCI Corporation :-

i) The decline in production of AB in India is not due to increased AB imports. The prevailing power crisis coupled with high power tariffs in India made the supply of Calcium Carbide scarce and expensive resulting in reduction of production and inadequate supply of AB in the local market by the domestic producers hence the increase in imports.

ii) There is no deliberate intention of reducing the prices of AB imported into India and the same is based solely on market prices. Since international prices of AB have gone down MCCI has also reduced its AB price but MCCI prices are fair and reasonable.

iii) Imposition of SG duty on AB will adversely affect the Dry Cell Battery manufacturers by increasing their cost.

c) DENKA & DSPL :-

- i) The net increase of import should be taken only after deducting the increase of total consumption in India. The net increase of import of AB is attributable to increased demand of AB by the users of AB specially when domestic producers fail to meet the demand of dry cell battery manufacturers.
- ii) Infrastructure problems such as power and labour and inefficiency of the domestic producers cause serious injury or threaten to cause serious injury to the domestic industry.
- iii) Rate of provisional duty is unfair and unjustified.
- iv) The marginal decrease in price of imported AB from US \$ 2280 in 1996 to US\$ 1970 in 1997 (CIF) was due to fall in international prices.
- d) Embassy of the Peoples' Republic of China did not make any specific submissions except asking for a list of Chinese exporters of AB in India as well as a list of Indian importers of AB from China. The information regarding all known importers/exporters etc. is already available in the application.
- e) The Republic of Singapore wanted to be apprised of the developments and progress of the investigation and in their view imposition of provisional safeguard duty was unwarranted.
- f) The South African Economic Office made the following points as convenor of six countries exporting AB to India.
- i) Surge in imports is due to the fact that local producers of the AB were unable to fully supply the demand due to problems encountered by them on account of power cut, labour problems and obsolete production method whereby AB is produced from Calcium Carbide which is extremely energy intensive.
- ii) Increased imports did not cause serious injury to local production as all manufacturers except Tecil increased their production during the year 1996-97. The reduced production of Tecil was due to labour and power problems and has nothing to do with the imports.
- iii) Imposition of safeguard duty would render India's industry non-competitive internationally.
- g) Embassy of France in India :-
- i) Seriousness of injury did not appear to be established as the market share of the Indian industry remains very high (close to 80%) and the local production remains stable over a considerable period.

ii) Significant price drop of imported AB occurred only after April 1997 while the increase of import started a year back.

iii) Indian industry suffers from over capacity of production and technological gap.

h) Embassy of Japan in India :-

i) Among the four Indian producers who applied for safeguard measure, only one producer experienced decline of its output during the period examined. Under the circumstances, the consistency of the Indian Safeguard measure to Article 4(1) of the Agreement on Safeguards is doubtful.

ii) Determination of serious injury or threat of serious injury to the domestic industry should take into account not only the share of imported product in the domestic market and the levels of sales and production, but should evaluate all relevant factors including “productivity, capacity utilisation, profits and losses and employment.” Three of the four domestic producers have increased their output. It is, therefore, doubtful whether there is serious injury or threat to the domestic industry.

iii) Causal link between increased imports of the product and serious injury or threat thereof should be demonstrated on the basis of objective evidence. Recent increase in the imports of AB is mainly due to Indian domestic problems including failure of electricity supply, labour dispute, loss of competitiveness owing to delayed measures to increase efficiency.

iv) Whether provisional safeguard duty at the rate of Rs. 19,500 per MT would cause the total duty of AB to exceed the level given under Schedule of Concessions? India needs to fulfil its duties of investigation, notification and consultation under the Agreement on Safeguards.

(F) FINDINGS OF DG

10. I have gone through the case records and the submissions made by the interested parties. The issues raised by various parties are dealt with at appropriate places in the findings below :-

11. Product under investigation

The product under Investigation is Acetylene Black (AB). AB is a unique type of Carbon Black. It is fluffy and has a bulk density of 19 kg per cubic meter. It is the purest form of carbon black. It is the most crystalline of the commercial blacks and is a product of low surface activity, low moisture absorption, high liquid (acetone, HCl) absorption and high electrical and thermal conductivity. AB

is mainly used to improve the conductivity of manganese dioxide used in dry cells. Abroad it also finds application in the manufacture of rubber heater pads, heater tapes, anti-static belt drives and shoe soles. It is also used in the manufacture of aircraft tyres. The process of manufacture basically comprises of generation of acetylene, its purification and its thermal decomposition to acetylene black. AB is classified under heading 2803.00 of the First Schedule to the Customs Tariff Act, 1975, which covers Carbon (Carbon blacks and others forms of Carbon not elsewhere specified or included). The Indian Trade Classification (ITC) based on Harmonised Commodity Description divides the heading into three sub-classifications namely, 28030001 - Acetylene Black Carbon, 28030002 - Carbon Black for Rubber Industry and 28030009 Carbon Black not elsewhere specified. The present investigation concerns Acetylene Black classified under heading 2803.00 of the First Schedule to the Customs Tariff Act, 1975. It may, however, be mentioned that the classification indicated above is only for the purpose of description and does not in any manner restrict the scope of the coverage of the product under investigation.

12. AB in India is manufactured through Calcium Carbide route as well as through the Petrochemical i.e. Hydrocarbon route. In the Calcium Carbide route, AB is produced by the reaction of Calcium Carbide with water. In India AB produced through Calcium Carbide route is costlier than that produced through the Petrochemical route. The domestically produced AB is used for the same purpose as the imported product and is a like article to the imported AB within the meaning of the SGD Rules.

13. The users/importers have claimed that the product imported from Belgium is not AB but it is Conductive Carbon. It has been submitted that M/s. MMMSA, Belgium have developed this new item and is being test marketed as a low cost-substitute to AB. It is manufactured not from acetylene and, therefore, should be excluded from the scope of the present investigation. However, no further details have been provided as to how it is manufactured or is different from AB.

14. It is observed that product imported through Belgium i.e. Conductive Carbon is imported by the dry cell battery manufacturers and is described in the documents as 'Carbon Black Super P' which is used for the same purpose i.e. in the manufacture of dry cell batteries. It functionally and commercially substitutes AB. Persons dealing with AB do not distinguish between AB and Conductive Carbon which is reflected in the reply to Questionnaires (reproduced below) filed by Indo National Ltd., the importers of Belgium material.

- | | | |
|----|---|--|
| a. | Name of the product imported | Acetylene Black |
| b. | Description of the product including various grades, sizes, models or type etc. | a) Acetylene Black (Denka)
50% compressed.
b) Carbon Black - Super "P"
c) Acetylene Black (China) |

It is evident from the above that the users of Carbon Black Super P, the so-called Conductive Carbon, themselves have described this product as AB. Commercially, functionally and in consumers' perception, Carbon Black Super P, the so called Conductive Carbon is the same as AB which is the subject matter of the present investigation.

15. It is also observed that in the compilation of import statistics, the Director General Commercial Intelligence and Statistics (DGCIS), Calcutta has recorded the imports of Carbon Black from Belgium under classification 28030009 which pertains to Carbon Black - nes. However, while the per MT prices of Carbon Black under this classification are in the range of Rs. 137 per kg, the prices of Belgium material have been recorded in the range of Rs. 66 per kg. It is also observed from the copies of import documents provided by the users/importers of AB that the prices of 'Conductive Carbon' i.e. Carbon Black Super-P have been of the order of US \$ 1800 PMT CIF. The price of Carbon Black for Rubber Industry is in the range of Rs. 20 per kg and that of Acetylene Carbon Black in the range of Rs. 69 per kg. The price of Conductive carbon of about Rs. 66 per kg is well beyond the price range of Carbon Black used for Rubber Industry or for other purposes and compares well with the price of AB used in the manufacture of dry cell batteries.

16. In view of the above Conductive Carbon does not merit exclusion from the scope of the coverage of the product under investigation and the present investigation covers all Acetylene Black Carbons including Carbon Black Super P from Belgium, the so called Conductive Carbon.

Domestic Industry

17. The findings in paragraph 5(iv) concerning domestic industry given in the Preliminary Findings are confirmed.

Increased imports

18. AB was being imported into India in the late 1970s and early 1980s. However, there have been practically imports of only small quantities since middle of 1980s till early 1996. During the period under investigation the imports have increased from 8.3 MT in 1994-95 to 71 MT in 1995-96 and to 1169.42 MT in 1996-97 (on verification of the data furnished by the importers of AB it is found that imports in 1996-97 were 1169.42 MT instead of 841.04 MT). In the year 1997-98 the imports have been 625.38 MT in the first six months (April-Sept.). During the corresponding period the domestic production has been 3355.43 MT, 3570.075 MT, 3274.62 MT and 1272.25 MT respectively. The imports as compared to the domestic production stood at 0.24% in 1994-95, 1.98% in 1995-96, 35.7% in 1996-97 and 49.16% in 1997-98 (April-Sept.). The imports, thus, have increased both in absolute terms as well as compared to domestic production during the period under investigation.

19. The users/importers have claimed that imports during 1994-95 and 1995-96 were only of small quantities and the first year of real imports was 1996-97 but that was an abnormal year in view of the fact that one of the four domestic producers namely M/s. Tecil was non-operative for a considerable period due to power and labour problems. The imports, thus, were made to meet the shortfall in domestic production as well as to meet the increased domestic demand.

20. In this regard it is observed that the increase in imports is to be considered over a period which under the Trade Notice No. SG/TN/1/97 dated 26th September, 1997 issued by the DG has been specified to be a period of the most recent 3 years (or longer) immediately preceding the commencement of investigation for which data is available. In the current investigation, therefore, the period of investigation has been rightly taken as 1994-95, 1995-96, 1996-97 and the first six months of the year 1997-98 for which data was made available by the applicants and verified by the team of officers. Whether or not there were imports in any of these years is irrelevant specially as the evaluation of imports is to be done on a comparative basis for the entire period. If there were no imports or only a small quantum of imports in a year, that year cannot be ignored only on that ground. The increase in imports for the entire period in totality has to be considered for arriving at a decision whether imports have increased during the period. The answer is clearly in the affirmative in the present case.

Serious Injury

21. An analysis of various factors attributing to the serious injury reveals that the domestic production has fallen down from 3570.075 MT in 1995-96 to 3274.62 MT in 1996-97 and to 1272.25 MT in the first six months i.e. April-Sept. of 1997-98. The domestic industry thus lost production by 8.28% in the year 1996-97 as compared to 1995-96 which further declined by 22.3% on a pro rata basis in April-Sept., 1997-98 as compared to 1996-97 and by 28.86% as compared to 1995-96. Similarly, the domestic industry faced a decline in capacity utilisation which fell down from 63.75% in 1995-96 to 58.46% in 1996-97 and to 45.42% in the first six months of 1997-98. The domestic industry also lost sales from a high of 3574 MT in 1995-96 to 3017 MT in 1996-97 which further declined to 1291 MT in the first six months of 1997-98. In percentage terms the domestic industry lost 15.58% sales in 1996-97 as compared to 1995-96 and 14.42% in the first six months of 1997-98 on a pro rata basis as compared to 1996-97 and by 27.76% as compared to 1995-96 on a pro rata basis. The domestic industry lost its market share in the apparent consumption i.e. domestic sales plus imports which was 98.05% in 1995-96 to 71.8% in 1996-97 and to 67.38% in the first six months of 1997-98. The imports occupied a share which has progressively increased from 1.95% in 1995-96 to 28.2% in 1996-97 and 32.62% in the first six months of 1997-98. At the same time the inventory of domestic industry built up from 50.71

MT in 1995-96 to 308.12 MT in 1996-97 and 226 MT at the end of first six months in the year 1997-98. The domestic industry also suffered loss in productivity (i.e. production per employee) together with the loss of production as they carried on their operations without retrenching the work force.

22. Serious injury in accordance with Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975 means a significant overall impairment in the position of a domestic industry. It is a result of changes in the level of sales, production, capacity utilisation, employment etc. If on an objective evaluation all the factors taken together as a whole certainly tend to show that some degree of adverse effect has been caused to the domestic industry, it may well result in the finding of serious injury. In the case under investigation it is seen that domestic production which reached a peak of 3570.075 MT in 1995-96 from 3355.43 MT in 1994-95 has drastically fallen in 1996-97 and thereafter in 1997-98. The same trend is exhibited in the capacity utilisation as well as in the domestic sales and the share of the domestic production in the apparent consumption. The domestic industry has also suffered increases in the cost of production coupled with reduction in sales realisation resulting in operating losses, stoppage of production by some of the domestic producers and loss of man-days in the case of others. Panyam had to shut down their plant from 10th April 1997 to 2nd June 1997 due to insufficient orders. Similarly Senka did not produce AB in September 1997 as there was no off-take by the customers. All these factors put together certainly tend to show that the domestic producers have suffered loss of production, loss of sales, building up of inventories, loss in capacity utilisation, loss of employment and profitability which clearly indicates that the domestic industry has suffered serious injury during the period under investigation.

Causal Link

23. The domestic industry has suffered serious injury as observed above. However, the crucial question is whether this sufferance of the domestic industry is on account of increased imports or it is a self inflicted injury on the domestic industry as argued by some interested parties. One of the major issues which needs to be addressed in this regard is the effect of labour and power problems faced by Tecil in the year 1996-97. It has been claimed that Tecil during 1996-97 was having no power supply for 76 days and faced a power cut ranging between 30-70% during the last five months. They also suffered from labour problem for about 48 days. It has been argued that the cumulative effect of these factors has been that Tecil remained inoperative for 124 number of days and suffered 46 percent loss of production on their accounts. On the other hand, the domestic producers have submitted that it is not a matter of fact that Tecil remained closed for 124 days as power and labour problems overlapped each other and, therefore, the computation of number of days by Dry Cell Manufacturers is not correct. In this regard, it is observed that the fact is that Tecil did face power and labour problems during the year 1996-97. As against an installed capacity of 2000 MT

Tecil accounted for a production of only 474 MT in 1996-97. It has been argued that it is because of this loss of production of Tecil that the total domestic production has shown a decline in 1996-97. The domestic industry comprises of four domestic producers namely, Senka, Tecil, Panyam and Oswal. While the three domestic producers (other than Tecil) showed an increase in production during 1996-97 it was only Tecil who showed a loss of production and thereby bringing down the total domestic production from 1995-96 level. As per the definition of domestic industry it means the domestic producers taken as a whole or those who account for a major proportion of the domestic production. Tecil had an installed capacity of 2000 MT as against the total capacity of 5600 MT and they accounted for a production of 474 MT in 1996-97 as against the total production of 3274.62 MT. On both these counts Tecil who alone suffered loss of production cannot constitute domestic industry and, therefore, injury suffered by Tecil alone by way of loss of production etc. cannot constitute injury to the domestic industry as a whole.

24. It is important to analyse this issue first as it lies in the heart of the determination whether the injury caused to domestic industry is on account of increased imports or on account of other factors. In the present case the domestic industry comprises of four producers. Admittedly as per the definition of the domestic industry all the four producers taken together or those who account for a major proportion of the domestic production need to be considered as domestic industry. The application has been filed on behalf of all the four domestic producers which account for the entire domestic production and the analyses of serious injury in Paragraph 21 and 22 above also takes into account data for all the four domestic producers taken together.

25. The crux of the argument of AB users /importers is that while three out of the four producers, who accounted for a major proportion of domestic production, achieved higher production in 1996-97, the decline in overall production mainly due to inability of the fourth producer due to power and labour problems cannot result in a finding of loss of production and consequently in the finding of serious injury suffered by the domestic industry as a whole.

26. I am afraid this argument is totally fallacious. Firstly, the law does not require that for a determination of increased imports or serious injury the domestic production must fall. A finding of increased imports is to be arrived at after considering the imports in absolute terms as well as compared to the domestic production. In case the domestic production was increasing but if the imports were increasing still faster, a finding of increased imports can well be made as the imports increased both absolutely as well as compared to domestic production. Safeguard protection will be available to the domestic industry in such a situation if it could be demonstrated that the domestic industry suffered serious injury or a threat thereof caused by the increased imports. In other words, a finding of serious injury does not necessarily require domestic production to fall. Secondly, it is

natural that if out of four domestic producers one of them is unable to produce and contribute to its market share, the market share vacated by him would be endeavored to be taken over by the other domestic producers and for doing so they would have to step up their production to meet with the increased domestic demand created on them as a result of loss of production and sale by one of their fellow producers.

27. It is to be kept in mind that the domestic producers amongst themselves are competitors of each other and would like to make fullest use of any opportunity to capture the market share. It is in the light of this observation that the facts and figures of domestic production of the other three domestic producers would have to be seen. The three domestic producers besides Tecil collectively accounted for a production capacity of 3600 MT. They accounted for a domestic production of nearly 2800 MT in the year 1996-97, out of a total domestic production of 3274.62 MT, 474 MT of which were contributed by Tecil. The three domestic producers, therefore, accounted for about 2800 MT as compared to a capacity of 3600 MT available with them which accounted for 77.78% of capacity utilisation. Taking account of individual capacities it is observed that Panyam had an installed capacity of 1800 MT and they produced 1949 MT. Senka had an installed capacity of 900 MT and they produced 630 MT in 1996-97. They thus had a scope to further achieve production to meet with the domestic demand. I must hasten to add that availability of Calcium Carbide was not an issue as it was freely importable and perhaps at cheaper prices as is evident from the fact that an anti-dumping petition against Calcium Carbide imported from PR China and Romania has been filed before the Designated Authority. In the case of Oswal, they produced about 220 MT in 1996-97. However, it is seen that although they had an installed capacity of 900 MT they have not produced Acetylene Black beyond 220 MT or so. It is also observed that in the year 1996-97 Tecil had power and labour problem till November 1996 and in November 1996 they informed the Dry Cell Manufacturers that they had commenced their operations at full capacity and that they were in a position to offer Acetylene Black. The domestic producers collectively carried a monthly stock of about 20.99 MT on an average from April, 1996 to October, 1996 which increased on an average to 159.88 MT for Nov.-March, 1997 period. Tecil had an opening stock of 4.88 MT in their hand in November, 1996 and they produced 27.33 MT in that month. They however were able to sell only 9.7 MT from out of this quantity, 7.5 MT of which were supplied to Geep. The Inventories of Tecil were built upto 22.91 MT in the beginning of December, 1996 in which month they produced 59.88 MT but could sale only 25 MT as only Lakhanpal lifted this quantity but no other Dry Cell Manufacturer procured material from Tecil. Similarly in the beginning of January, 1997 the inventories went up to 57.8 MT, 61.4 MT in February, 1997 and 92.4 MT in the beginning of March 1997. At the end of March, 1997 the inventory was 89.40 MT. Obviously this was the result of Dry Cell Manufacturers not lifting domestically available Acetylene Black with Tecil. It is also observed that collectively the domestic producers carried an inventory of 308.12 MT at the end of 1996-97 as compared to

50.71 MT of the end of 1995-96. It is, therefore, not correct to state that the domestic producers did not meet with the domestic demand or were not in a position to meet with the domestic demand.

28. An analysis of the domestic demand and supply situation will also be important at this stage. It is observed that in 1996-97 M/s. Geep placed an order of 193 MT on Panyam and lifted 175 MT from them. They placed an order for 50 MT on Tecil and received 25 MT. From Senka, they procured 37.5. M/s. Indo National Ltd. received 282 MT from Panyam as against 330 MT and 515 MT from Senka as against orders of 480 MT. Lakhnopal Ltd. received 127 MT from Panyam meeting their demand fully and 220 MT from Tecil as against 281 MT. Eveready India Ltd. received 1165 MT from Panyam as against 1203 MT, 127.5 MT from Tecil as against orders of 180 MT and 15 MT from Senka who serviced fully the orders placed on them. In totality the four buyers received 2689 MT of Acetylene Black as against orders of 2896.5 MT resulting in a short supply of 207.5 MT from the domestic producers. This is on the face of the fact that Dry Cell Manufacturers were rescheduling their orders and reducing quantities of their off-take after placing orders on the domestic producers and they were persisting with their demand on the domestic producers to reduce their selling prices to bring the same in line with the imported Acetylene Black prices. As against this short supply of 207.5 MT, the domestic producers carried on an inventory of 308.12 MT as compared to 50.17 MT in 1995-96. The domestic producers could have supplied even this quantity of 207.5 MT if it was not for reasons other than availability of AB with the domestic producers. This reason was the inability of the domestic producers to cope with the demand of bringing their prices in line with the imported prices.

29. The Dry Cell Manufacturers imported 1169.42 MT of AB in 1996-97. They have submitted that there was an increase in consumption of 213 MT from 3645 MT in 1995-96 to 3858 MT in 1996-97 which coupled with a shortfall of 558 MT in production of Tecil accounts for 771 MT which was the cause of increase in imports of about 770 MT of AB in 1996-97. This argument is strongly biased in favour of the imports as it claims the entire growth in consumption and shortfall in production of Tecil to be catered by imports and, is therefore, totally unreasonable. As mentioned above, the actual imports in 1996-97 were 1169.42 MT which were 1098.42 MT more than 1995-96. The apparent domestic consumption (domestic sales + imports) increased by about 14.84% in 1996-97 to 4186 MT as compared to 3645 MT in 1995-96 and fell down by 8.46% to 1916 MT in the first six months of 1997-98 as compared to 4186 MT in 1996-97 on pro rata basis. The share of the imported Acetylene Black in this apparent consumption increased from 0.24% in 1994-95, to 1.95% in 1995-96, to 28.2% in 1996-97 and to 32.62% in the first six months of 1997-98 and the domestic production lost its share from 99.76% to 98.05%, to 71.8% and to 67.38% respectively in the corresponding periods. The domestic producers accounted for a sale of 3574 MT in 1995-96 out of a total apparent consumption of 3645 MT which increased to 4186 MT in 1996-97 but

the domestic sales fell to 3017 MT. Tecil's share in the domestic sale was 389.66 MT. The other three domestic producers, therefore, accounted for 2627.34 MT as against their share of 2531 MT in 1995-96, which should have grown to 2906.75 MT taking the growth in apparent consumption into account even if the other three producers had not taken over any of the sales lost by Tecil. The domestic production which increased by about 6% in 1995-96 fell down by 8.28% in 1996-97 and by about 22.3% in the first six months of 1997-98. The domestic producers lost a production of about 295 MT in 1996-97 as compared to 1995-96. If the growth in apparent consumption of about 14.84% is taken into account the domestic producers lost about 825 MT in their production. As mentioned earlier, the actual imports in 1996-97 was 1169.42 MT. After making an adjustment for the quantity of 207.5 MT short supplied, increase of 14.84% in the 71 MT AB imported in 1995-96, the excess imports in 1996-97 amount to about 880 MT. The excess imports compare well with the production of about 825 MT lost by the domestic producers.

30. The serious injury to the domestic industry which started taking place in 1996-97 manifested itself more prominently in the first six months of 1997-98. In this period the domestic production fell down to 1272 MT i.e. by about 22.3 % as compared to 1996-97 and by 28.86% as compared to 1995-96 on a pro rata basis. Sales of domestic producers fell down to 1291 MT in the first six months of 1997-98 i.e. by 14.42% as compared to 1996-97 and by 27.76% as compared to 1995-96 on a pro rata basis. The domestic producers could achieve this reduced sales only at reduced prices. Senka dropped its prices of AB from Rs. 1,22,000 PMT to Rs. 95000 PMT in Sept. 1997, Panyam dropped prices from Rs. 1,04,500 PMT to Rs. 95000 PMT and Tecil from 1,05,000 PMT to Rs. 94,000 PMT in the same period. Tecil for some time during first half of 1997-98 suffered with power problem and they remained closed from 14th April to 23rd April 1997 and 6th May to 10th August, 1997. They, however, produced 121.52 MT of Acetylene Black in this period and the other three domestic producers accounted for 1150.48 MT during this period. The production of these three domestic producers which was 2800 MT in 1996-97 fell down by about 17.82% on a pro rata basis. The imports in the first six months of 1997-98 accounted for 49.16% of the domestic production. This happened not because the domestic producers could not cater to the domestic demands as they carried on with an inventory of 308.12 MT in the beginning of the year and 226 MT at the end of the first six months of 1997-98 and they had capacity surplus to cater to the domestic demand including Tecil who did not have sufficient orders to service inspite of a reduced production. A mention has been made about the quality of AB of Senka in 1997. It is observed that Senka manufactured AB to IS Specification No. 12170/1987 and also received merit award from their main customer namely M/s. Indo National Ltd., an Indo-Japanese Joint Venture during this period and sold almost their entire production. While the Allahabad unit of Geep did not raise any complaint on quality of AB supplied by Senka, their Mysore unit manufacturing similar goods did not accept the quality of AB supplied by Senka. The explanation given by Senka in this regard appears

reasonable as it is unlikely that the two units of Geep would have different input acceptance norms. It is more likely that quality of Senka's AB was used only as an excuse to meet their requirement from cheaper sources abroad. The Dry Cell Manufacturers were insisting that the domestic producers of AB should reduce their selling prices in line with the imported prices and they also threatened the domestic producers to reduce their off-takes if the prices were not brought down by them. Price being the most important consideration in making a procurement decision, it had its effect on the domestic producers. The average CIF price of imported Acetylene Black fell from US \$ 2654 in July, 1996 to about 2500 US \$ in August 1996 and continued at this level till January, 1997 and a drastic fall thereafter to 2125 dollars, 2000 dollars and 1900 dollars in Feb., April and July 1997 respectively. The fall in imported AB prices is an admitted fact and the exporters have attributed this to the reduction in the freight charges of imported Acetylene Black.

31. It has also been argued that the AB price compares favourably with the selling price of Oswal and did not influence the price of the indigenous manufacturers other than Oswal. AB produced through Petrochemical route by Oswal was cheaper than the AB produced through Calcium Carbide route by the other three domestic producers. It was this price difference within the domestic industry which was certain to cause the so called price suppression for the other three units. In this regard it is observed that Oswal produced AB in the order of 200-225 MT which is approximately 5% of the domestic consumption. Inspite of lower prices their share in the domestic market remained at the same level. On the contrary, the share of the imported AB has increased manifold at declining prices as mentioned above. It is, therefore, obvious that it was the CIF import prices of AB which caused the price-suppression and influenced the decision to source the supplies.

32. An argument has been raised that price is not a relevant factor for consideration in the Safeguard investigation. In this regard it is observed that unlike in the case of anti-dumping investigation where the price discriminatory practices adopted by the exporters is the root cause for an anti-dumping action, in the case of Safeguard investigation increased imports is the fundamental requirement for maintaining a safeguard action. At what prices the imports are entering is not the relevant factor because it is not the unfair competition which is the subject matter of safeguard action but it is the competition per se offered by the increased imports to the domestic producers, even if it is at fair prices. Only in this context the import prices are not relevant. However, when it comes to determination of serious injury or threat thereof, the law requires an examination of change in level of sales, profitability etc. of the domestic producers. These factors undoubtedly depend upon the prices of competing products and in that context import prices do become relevant and require an examination, specially to assess their effect on the domestic situation.

33. In conclusion, it is observed that the imports have grown phenomenally during the period under investigation. In percentage terms the imports have grown to 885.42% in 1995-96 over 1994-95, to 1646.5% in 1996-97 over 1995-96 and to 106.95% in the first six months of 1997-98 as compared to 1996-97 on a pro rata basis. These increased imports have progressively taken a significant share in the apparent consumption which increased from 0.24% in 1994-95 to 1.95% in 1995-96, 28.2% in 1996-97 and to 32.62% in the first half of 1997-98 on a pro rata basis. The serious injury to the domestic industry is a consequence of these increased imports. Factors other than increased imports do not appear to have any significant effect on the state of the industry in so far as the present investigation is concerned.

OTHER ISSUES

Inefficiency of domestic producers

34. An issue has been raised that the domestic producers of Acetylene Black are not operating efficiently and that their power consumption per metric ton of AB production is much higher as compared to international norms. In this regard, it is observed that the very purpose of imposition of Safeguard duty is to allow the domestic industry to become competitive. The fact that domestic industry is not competitive itself indicates that domestic industry suffers from certain inefficiencies which need to be removed by re-structuring. If the domestic industry was fully efficient perhaps it would have been competitive and, therefore, no need would have arisen for imposition of Safeguard duty. It is observed that the domestic industry has identified the reasons for their inefficiency and have requested for imposition of Safeguard duty so as to enable them to take necessary steps for improving upon the same and to protect them from the serious injury caused by the increased imports in the meantime.

Consumer interest

35. It has been claimed that imposition of Safeguard duty on Acetylene Black would make the Dry Cell Batteries costlier and this would be against consumer interest. In this regard, it is observed that the imposition of Safeguard Duty is not likely to have any significant effect on the user industry and the consumers thereof especially as the Safeguard duty is proposed to be imposed only to the extent necessary to protect the domestic producers of AB. Further, the Safeguard duty is to be liberalised periodically which should further reduce its impact on the user industry. The objective of Safeguard duty being to enable the domestic industry to re-structure itself and make positive adjustments to face the new situation of competition offered by the increased imports, it will be in the larger public interest to impose Safeguard duty as the user industry may then be able to source their

requirement from alternative competitive sources. It is, therefore, considered that imposition of Safeguard duty in the present case would not be against consumer interest rather it would serve the general public interest.

Price comparability of acetylene black produced through different routes.

36. It has been claimed that Acetylene Black produced through Hydrocarbon route is cheaper as compared to the Acetylene Black produced from Calcium Carbide. It has been submitted that Oswal's prices are about Rs. 20,000/- per MT lower than the prices of the other three domestic producers who manufacture Acetylene Black through Calcium Carbide route and the amount of provisional Safeguard duty recommended i.e. Rs. 19,500 PMT is approx. equal to the difference of the price of Acetylene Black manufactured through the two routes. It has been submitted that the price of Acetylene Black produced through different routes should not be compared. In this regard, it is observed that it is a fact that Oswal are manufacturing AB through the Petrochemical route and their prices are generally lower than the prices of other three domestic producers. However, in the case of international market also, as reflected by imports of AB in India, it is seen that the prices of AB exported by different exporters using Petro- chemical route or Calcium Carbide route are similar. The applicants have submitted that AB manufactured through Petrochemical route by DENKA (Singapore) was being sold at approx. US \$ 2400 in September 1996 and was brought down to approx. US \$ 1800 in October 1997. Correspondingly, in the similar period South Africa and the Philippines who manufactured Acetylene Black using Calcium Carbide have also adjusted their prices from approx. Us \$ 2400 down to approx. US \$ 1800. It is, therefore, observed that in the international market no distinction is made in the prices of Acetylene Black depending upon the use of raw material. In the case of Indian producers also, therefore, it would not be reasonable to compare the prices of imported AB separately with the AB produced through different routes. The Safeguard duty being levied on the 'product' concerned and the AB products through the two routes being alike, it will be reasonable to compare prices of domestically produced AB on an industry average basis with the average prices of the imported AB irrespective of the route adopted for the manufacture of AB.

Adjustment plan

37. The domestic industry has submitted adjustment plan in its application . It was submitted that Tecil who manufacture AB through Calcium Carbide route have decided to have their own captive Hydro-Power Project in Kerala in close vicinity of the manufacturing unit. They intended to install two Hydro-Power Projects with capacity of 7.5 M.W and 15 M.W and that the projects were under implementation. Manufacture of Calcium Carbide being the major raw material and power intensive, any savings in the cost of power would have a great impact on the cost of production of AB making it more economical by bringing down the average cost of production. Tecil have submitted details of their Hydro-Power

Projects on a confidential basis. It is observed that Tecil have initiated necessary action to re-structure their plant and they are in the process of making a positive adjustment which would enhance their competitiveness.

38. In respect of Senka who are producing Acetylene Black through the Calcium Carbide route, they do not have their own captive Calcium Carbide Unit. They have, therefore, to buy their major raw materials from outside sources. Senka, therefore, submitted that they were discussing with the Petro Chemical Industry for getting Acetylene Gas for converting into AB by cracking the gas. Panyam mentioned that they were also taking steps similar to those proposed by Senka. In this regard, it has been argued that two of the domestic producers have joined in filing an anti-dumping application concerning imports of Calcium Carbide before the Designated Authority in the Ministry of Commerce. In this application it has been mentioned that "in India Union Carbide Ethylene Plant at Chambur Bombay had been recovering acetylene by solvent extraction of the cracked gases in the Naphtha cracker. (But now there are no known manufacture of Acetylene in the Petrochemical Industry in India)". In view of this statement in the anti-dumping application it has been argued that the adjustment plan of Senka and Panyam is not realistic as availability of acetylene through Petrochemical route is doubtful. In this regard, it is observed that the statement made in the anti-dumping application in which two of the domestic producers of Acetylene Black are petitioners is a vague statement to the effect that the petitioners were not aware of any known manufacturers of acetylene in Petrochemical Industry in India. It should be kept in mind that this statement has been made by the petitioners seeking anti-dumping duty to protect their own production of Calcium Carbide and in this context to highlight the need to protect Calcium Carbide as the only source to produce acetylene, they have made this statement. On the other hand, it is seen that Senka has specifically mentioned about their efforts for getting acetylene gas from the Petrochemical Industry for cracking and producing AB. They have been pursuing this matter since March 1996 which has now reached the Ministry of Chemicals and Fertilizers. Senka have also produced a copy of letter dated March 9, 1996 which is addressed to Indian Petrochemical Corporation Ltd., Baroda, in the context of supply of Acetylene Gas as feed stock for manufacture of Acetylene Black. It is also observed that in the anti-dumping application concerning the dumping of Calcium Carbide itself it is mentioned that during the process of manufacture of ethylene in Naphtha/Gas/Oil crackers a small amount of Acetylene is also formed and the amount of acetylene produced varies with the feed stock and with the temperature of cracking. It is abundantly clear from this document produced by the Dry Cell Manufacturers that acetylene is being generated in the manufacture of ethylene and that the quantum of production of acetylene can be varied with the feed stock and with the temperature of cracking. Possibility of domestic producers of AB to obtain acetylene from Petrochemical units in India is, therefore, not an unrealistic proposal as large petrochemical units producing ethylene have been set-up in India. The matter is before the concerned Ministry and, therefore, the argument made by the Dry Cell Manufacturers is not

tenable. It is also observed that for the domestic industry to be competent it is not necessary that the domestic industry must produce Acetylene Black through Petrochemical route alone. Some of the international manufacturers in South Africa and the Philippines are producing Acetylene Black through Calcium Carbide route and such Acetylene Black is entering into the Indian markets at competitive prices which clearly indicates that it is possible to produce Acetylene Black at competitive prices through the Calcium Carbide route.

39. In view of above, it is observed that the adjustment plan submitted by the domestic industry is not hypothetical or academic. They are making a sincere effort to become competitive so as to face competition offered by the imports. It is considered that imposition of Safeguard duty would help them in re-structuring and to become competitive. It is also observed that some of the domestic producers have already taken steps in this direction and the domestic industry would need a period of about two years to substantially complete their plans.

Share of different countries

40. The findings in this regard at Paragraph 5(ix) of the Preliminary Findings are confirmed.

CONCLUSION AND RECOMMENDATIONS OF THE DG

41. In view of the findings above, it is concluded that increased imports of AB have caused serious injury to the domestic producers of AB and imposition of safeguard duty for a period of two years will be in the Public interest.

42. While arriving at the quantum of safeguard duty which will be adequate to protect domestic industry, the cost of production (confidential) of AB produced domestically has been taken on a weighted average basis for the entire domestic industry. Similarly, the CIF import prices of AB have also been taken on weighted average basis. Adjustments have been made for duties, taxes and handling charges as applicable both for domestically produced AB and for the imported AB. No adjustment has, however, been made for the sales tax or other local taxes paid on the domestically produced AB in view of the Budget 1998-99 Provision of levying 4% Special Additional Duty on imports (not meant for sale) which takes into account sales tax and other local taxes etc. generally levied on domestically produced goods. It is also considered that the levy of 4% Special Additional Duty is not likely to have any significant effect on the weighted average cost of production of domestically produced AB as during the period under investigation Tecil and Panyam produced the major raw material i.e. Calcium Carbide captively and Senka alone imported a part of their Calcium Carbide requirement. Oswal also used captively produced acetylene in the production of AB. The weighted average cost of production for the domestic industry is, therefore, not likely to be affected in any significant manner and no adjustment in the weighted average cost of

production of domestically produced AB is, therefore, proposed to be made on this count. The domestic producers have claimed 5% profit margin, which is considered reasonable.

43. Accordingly, the below mentioned Safeguard duty is recommended to be imposed on Acetylene Black imported into India for a period of two years from the date of its first imposition.

First year @ Rs. 12950 PMT
Second year @ Rs. 8830 PMT

[No. SG/INV/I/1997]

R. K. GUPTA, Dir. Gen. (Safeguards)